thearyasamaj.org


।। ओ३म् ।।

# आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रबल उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई. नं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १९१
सृष्टि सं.- १९६०८५३११५

वर्ष-13 अंक-11 आश्विन शु. ७ से कार्तिक कृ. ७ सं. २०७१ वि. 1 से 15 अक्टूबर 2014 अमरोहा, उ.प्र. पृ. 10 प्रति-5/-

इन्दौर में आयोजित आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन में उपस्थित युवक-युवती व आयोजक- केसरी।

## सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में इन्दौर में भव्यतापूर्वक हुआ

# आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

### 10वां परिचय सम्मेलन होगा 23 नवम्बर को आणंद में

**अर्जुन देव चड्ढा**
इंदौर

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन 28 सितम्बर को आर्य समाज महर्षि दयानन्द गंज में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि प्रकाश आर्य, मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली व मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आर्य समाज का एक क्रान्तिकारी कदम है। उन्होंने कहा कि जातिगत आधार के स्थान पर गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल विवाह ही सुखी गृहस्थ की रीढ़ है। महर्षि दयानन्द के इस संदेश का पालन करके ही परिवार वैदिकधर्मी व सुखी हो सकते हैं।

इस अवसर पर राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन के प्रति आर्य परिवारों का रूझान बढ़ा है। यही कारण है कि अब तक हुए आठ परिचय सम्मेलनों के माध्यम से 400 से अधिक रिश्ते हो चुके हैं।

इंदौर में यह दूसरा परिचय सम्मेलन था तथा राष्ट्रीय स्तर पर यह 9वां सम्मेलन है। उन्होने कहा कि आगामी परिचय सम्मेलन गुजरात के आणंद नगर में 23 नवम्बर 2014, रविवार को होगा।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. दक्षदेव गौड़ ने कहा कि आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक मान्यताओं के आधार पर आयोजित किये जा रहे हैं, जो नींव का पत्थर साबित होंगे। इससे युवाओं को आर्य विचारधारा से जोड़ने में सहायता मिलेगी।

कार्यक्रम में उपस्थित उम्मीदवार युवक-युवतियों ने मंच पर आकर उत्साह व आत्म विश्वास के साथ अपना-अपना परिचय दिया। कुछ अभिभावकों न अपने पुत्र-पुत्रियों का परिचय दिया। युवतियों ने कहा कि आर्य परिवारों में हम पली बड़ी हैं अतः जीवनसाथी भी आर्य परिवार का हो तो गृहस्थ जीवन आनंदित रहता है। आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन में आकर हमें अच्छा लगा। युवकों ने कहा कि ऐसे आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन देश के अन्य प्रांतों में भी आयोजित होने से इसका दायरा बढ़ेगा व आर्य संस्कारों वाला जीवन साथी खोजना आसान हो जायेगा।

कार्यक्रम प्रभारी व आर्य समाज महर्षि दयानंद गंज के संयोजक दिनेश गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित करने का दायित्व हमें दिया गया। कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न काउंटर विशेषकर पूछताछ, रजिस्ट्रेशन, पुस्तिका वितरण, बेज वितरण तथा तत्काल रजिस्ट्रेशन लगाए गए थे, जिसमें श्रीमती शिखा गुप्ता, कु. श्रुति गुप्ता, श्रीमती विमला गौड़, श्रीमती रेणु गुप्ता, श्रीमती सपना सोनी, श्रीमती अनिता गुप्ता, श्रीमती शशि गुप्ता विभिन्न काउंटरों पर अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन कर रही थीं। युवा कार्यकर्ता शरद यादव, प्रकाश चौधरी, आशीष उपाध्याय, मोहनसिंह आर्य, बालाराम आर्य, अरूण गुप्ता, धर्मेन्द्र शास्त्री, सुरेश आर्य ने व्यवस्था में सहयोग दिया।

डॉ. अखिलेश चंद शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर चाय-नाश्ता, भोजन व अतिथियों के आवास की व्यवस्था आर्य समाज द्वारा निःशुल्क की गई थी।

## आर्यसमाज की शताब्दी १० से

**विनोद कुमार वार्ष्णेय**
बिसौली (बदायूं) उ.प्र.।

आर्यसमाज बिसौली का शताब्दी समारोह 10 से 12 नवम्बर तक धूमधाम से मनाई जायेगी। यह जानकारी प्रधान हरिप्रकाश आर्य तथा मंत्री विनोद कुमार वार्ष्णेय ने देते हुए बताया कि शोभा यात्रा 10 नवम्बर को पूर्वाहन् 11 बजे से निकलेगी। समारोह में डॉ. ओमव्रत आचार्य, वैदिक प्रवक्ता, आचार्य विजयदेव नैष्ठिक, प्राचार्य गुरुकुल, कोठरा, आचार्य वेदव्रत आर्य, प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा, बदायूं, पं. सत्यवीर आर्य, पं. रामकेश आर्य, सावित्री आर्या, भजनोपदेशक, हरिओम आर्य, योगाचार्य, सुमन आर्या, योगाचार्या आदि की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी हैं। आयोजक मण्डल ने भारी संख्या में श्रद्धालुओं से सहभागिता की अपील की है।

## स्वामी दिव्यानन्द का अभिनन्दन १६ को

दिल्ली (**डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण**)। अर्यजगत के योगनिष्ठ संन्यासी, वैदिक विद्वान, समर्पित व सरल व्यक्तित्व स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती के 75वें जन्मोत्सव पर राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली में अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह का आयोजन योग निकेतन, पश्चिमी बाग में 16 नवम्बर को होगा। इस अवसर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है। समारोह में स्वामी दिव्यानन्द को सम्मान राशि, श्रीफल, व शॉल भेंट करते हुए उनका अभिनन्दन किया जायेगा।

## स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती : हार्दिक आभार

### आर्यावर्त केसरी के बनाए 105 नये सदस्य

पूरे देश में साइकिल से घूम-घूम कर महर्षि देव दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों व वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार को समर्पित तथा आर्यसमाज के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए संकल्पित आर्य संन्यासी स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती ने 'आर्यावर्त केसरी' के 105 सदस्य बनाकर वेद के प्रचार-प्रसार व ऋषिवर के मिशन को गति प्रदान की है। आर्यावर्त केसरी परिवार आपके समर्पण के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता है। कोटिशः धन्यवाद,

-सम्पादक


## वर्ष २०१५ के भव्य कलैण्डर

महर्षि स्वामी दयानन्द एवं अन्य महापुरुषों के भव्य आकर्षक रंगीन चित्र आर्ट पेपर पर।

साइज 20X30 इंच= 800/- प्रति सैंकड़ा, 12X23 इंच 500/- प्रति सैंकड़ा। पर्वसूची-नियम।

1000 लेने पर समाज, फर्म, प्रतिष्ठान की छपाई निःशुल्क।

प्रचार कार्यालय- मौ० काली पगड़ी, अमरोहा (उ०प्र०),

फोन : 05922-263412

thearyasamaj.org


# हिन्दी दिवस पर काव्य गोष्ठी

विमल किशोर वन्देमातरम्
अमरोहा।

हिन्दी दिवस के अवसर पर काव्य गोष्ठी/ विचार गोष्ठी का आयोजन आर्य निवास, काली पगड़ी, अमरोहा में आयोजित किया गया। इस अवसर पर नरेन्द्र भावुक ने सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की।

काव्य प्रवाह की निरंतरता को बनाए रखते हुए चन्द्रपाल 'यात्री' ने कविता प्रस्तुत की- ''जीवित माताओं को भी ममियाँ बना डाला है/ अच्छे भले पिताओं को डैड कर डाला है।।''

खेमकरण शर्मा ने अपनी रचना को यूं प्रस्तुत किया- ''हिन्दी में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, स्वदेश परदेश में एक समान हो/ अपना पक्ष निर्भीक रख सकें, चाहे चीन हो या जापान हो।।''

प्रकाश प्रजापति ने अपनी लेखनी से निकले शब्दों को स्वर देते हुए कहा- ''अनुराग दया ममता की प्रतिमान है हिन्दी भाषा/ सुख शान्ति भजन जीवन का संधान है हिन्दी भाषा।।'' भुवनेश कुमार शर्मा 'भुवन' ने कुछ यूं हिन्दी का गुणगान किया- ''दिल है हिन्दी जान है, हिन्दी मेरी पहचान है/ राष्ट्र का गौरव है हिन्दी, हिन्दी-हिन्दुस्तान है।।''

शंकर अमरोही ने अपनी प्रस्तुति में कहा- ''सच कहता हूं हिन्दी रग रग में समाई है/ ऐ राष्ट्रभक्तों तुमको शत बार बधाई है।।'' चमनलाल रवि ने हिन्दी के विषय में परिभाषा दी- ''सद्भावना और समरसता आपसी प्रेम का नाम है हिन्दी/ ईर्ष्या द्वेष भेदभाव मिटाने का करती काम है हिन्दी।।''

नरेन्द्र भावुक ने हिन्दी को दुलारते हुए कहा- ''भारत माता के माथे की बिन्दी हिन्दी है/ सबकी भाषा प्यारी भाषा मेरी हिन्दी है।।''

ममता भरे शब्दों में माया शर्मा ने अपनी अभिव्यक्ति कुछ यूं प्रस्तुत की- ''सन्तों की अमर वाणी, गुरुओं का ज्ञान है/ हिन्दी हमारे देश की भाषा महान है।।''

कार्यक्रम का संचालन कर रहे एडवोकेट वंदेमातरम् ने अपनी ओजपूर्ण शैली में चेताते हुए कहा- ''बैठना नहीं मौन रहकर तेज से तम भस्म कर दो/ राष्ट्र के हिन्दी जगत में विश्व में विश्वास भर दो।।'' कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हरिश्चन्द्र आर्य ने कहा- ''जन-गण-मन की भाषा हिन्दी जन-जन की अभिलाषा है/ हिन्दी ही तो राष्ट्र एकता की सच्ची परिभाषा है।।''

इस अवसर पर डॉ0 अशोक रुस्तगी व डॉ0 संयुक्ता चौहान ने हिन्दी को राजभाषा घोषित किये जाने पर प्रकाश डालते हुए राजनीतिक रूप से हिन्दी को उपेक्षित किये जाने की बात कही।

कार्यक्रम में वेदप्रकाश भार्गव, अनिल माहेश्वरी, सुधांशु विश्नोई, डॉ0 महावीर सिंह, वीरेन्द्र पाठक, वीरसिंह, राकेश वर्मा, चंचल गुप्ता आदि उपस्थित थे।

**वैवाहिक विज्ञापन**

**यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..**

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

**न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 350/- तथा तीन बार की रु. 500/- निवेदित है।**

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

**: विज्ञापन कॉलम :**

**इस कॉलम में अपने प्रतिष्ठान अथवा संस्थान के क्रियाकलापों तथा उपलब्धियों एवं जन्मदिन, वर्षगांठ तथा विभिन्न पर्वो पर शुभकामनाओं के प्रकाशन के लिए तुरंत सम्पर्क करें और अधिक से अधिक लाभ उठाएं।**

**चलभाष- 09758833783, 09412139333**

# ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा- २०१५

**आर्य उपप्रतिनिधि सभा, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- १५ फरवरी से २१ फरवरी २०१५**

**प्रस्थान** : 15 फरवरी 2015 को प्रात: 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप। 14 फरवरी 2015 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्य समाज मंदिर, गंज स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद, दूरभाष- 09410065832 **वापसी** : 21 फरवरी 2015 रात्रि अहमदाबाद मेल से देहली तक।

**: परिभ्रमण कार्यक्रम :**

**पोरबन्दर, द्वारिका, सोमनाथ मंदिर, सावरमती आश्रम, अहमदाबाद आदि दर्शनीय स्थल**

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास, परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था उप सभा द्वारा होगी। **आप 3000/- रूपये का ड्राफ्ट आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अमरोहा के नाम से खाते में भिजवा दें या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। राशि 3000/- 15 दिसम्बर 2014 तक प्राप्त हो जानी चाहिए।** समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय।

**यात्रियों को आवश्यक निर्देश** :- ● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, मतदाता परिचय-पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि।● बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ●अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें। ● परिभ्रमण काल में आवास आर्यसमाज मन्दिर, पोरबन्दर, अहमदाबाद में रहेगा। ● कार्यक्रम संयोजक को व्यवस्था परिवर्तन का अधिकार है।

**आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं...**

□ श्रीराम गुप्ता- संरक्षक, □ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412),□ डॉ. अशोक कुमार आर्य- प्रधान (09412139333), □ डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार- मंत्री (09412634672), □ ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य- कोषाध्यक्ष (09412493724), □ नरेन्द्र कांत गर्ग- संयोजक (09837809405)।

# खसौर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

प्रतिनिधि
खसौर।

आर्यसमाज खसौर का 61वां वार्षिकोत्सव 4 से 6 अक्टूबर तक धूमधाम से मनाया गया, जिसमें आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान- स्वामी शिवकुमार शास्त्री (सहारनपुर), पं. सतीश सुमन, भजनोपदेशक (मुजफ्फरनगर), मोहित शास्त्री (बिजनौर), क्षमा, भजनोपदेशिक (इटावा), भूपेन्द्र सिंह बाटा (बिजनौर) जयनारायण अरुण (उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.) पधारे।

कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रात: 7 से 10 बजे तक यज्ञ व उपदेश, मध्याह्न 2 से 5.30 बजे तक भजन तथा रात्रि 8 से 11 बजे तक भजन व उपदेश हुए।

# युवक-युवती वैवाहिक सम्मेलन

अर्जुनदेव चड्ढा
नई दिल्ली।

28 सितम्बर को आर्यसमाज महर्षि दयानन्द गंज, इन्दौर में सम्पन्न आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक नवें सम्मेलन के बाद आगामी 23 नवम्बर को आर्यसमाज आणंद (गुजरात) में दसवां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने बताया कि पूर्व में इस तरह के आठ सम्मेलनों में अब तक 390 से अधिक रिश्ते हो चुके हैं। उन्होंने यह भी बताया कि सम्मेलन में भाग लेने के लिए बाहर से आये आर्य परिवारों के ठहरने, चाय-नाश्ते व दोपहर के भोजन की निशुल्क व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर रहेगी। राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि परिचय सम्मेलन में सहभागिता करने के इच्छुक माता-पिता अपने विवाह योग्य बच्चों के बायोडाटा फार्म भरकर, पंजीयन शुल्क दो सौ रुपये का ड्राफ्ट- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001 के पते पर भेजकर रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। रजिस्ट्रेशन फार्म मोबा. नं. 09540040399 पर डाक का पता भेजकर अथवा वेबसाइट www.thearyasamaj.org से भी डाउन लोड कर सकते हैं।

# बरनावा में हुआ सामवेद पारायण यज्ञ

सुमन कुमार 'वैदिक'
बरनावा (बिजनौर)।

9 से 11 सितम्बर तक लाक्षागृह बरनावा की पुण्य भूमि में 5 यज्ञवेदियों में ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के जन्म दिवस पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। चतुर्वेद पारायण यज्ञ के विशेषज्ञ आचार्य अरविन्द शास्त्री एवं गुरुवचन शास्त्री के संयुक्त ब्रह्मत्व में सम्पन्न इस यज्ञ में दूर-दूर से ब्रह्मचारी जी के प्रति श्रद्धा रखने वाले आये।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कहा कि हमें मनुष्य का चोला श्रेष्ठ कर्म करने के लिए मिला है। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त एक महान आत्मा थी, जिन्होंने यज्ञों का प्रचार किया। मैं उनके सान्निध्य में एक माह रहा।

ज्ञातव्य है कि लाक्षागृह, बरनावा, जो पाण्डवकालीन नगरी थी, जहां पाण्डवों के लिए लाखा मण्डप बनाया गया था। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी ने अपनी कर्मभूमि बना, एक गुरुकुल की स्थापना की। जहां प्रतिवर्ष होली से पूर्व 8 दिनों तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ, रक्षाबन्धन, दीपावली पर तथा अश्विन की पूर्णिमा पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन होता है।

# हर्षोल्लास से मनाया जाएगा वार्षिकोत्सव

**अमरोहा।** आर्यसमाज अमरोहा का 113वां वार्षिकोत्सव गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी 16 से 18 नवम्बर तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एकादशकुंडीय (विश्व शांति यज्ञ) एवं शोभायात्रा (नगर कीर्तन) आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। आर्यजगत के प्रसिद्ध संन्यासियों, विद्वानों, राष्ट्रीय नेतागणों, आर्योपदेशकों, कन्या गुरुकुलों, आर्य प्रकाशकों, बुक स्टालों, भजन कैसेट विक्रेताओं एवं आर्यजनों का अभूतपूर्व संगम होगा।

# हुआ वेद प्रचार

सुमन कुमार 'वैदिक'
रामपुर मनिहारान (सहारनपुर)।

आर्यसमाज में वेदप्रचार कार्यक्रम रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी तक मनाया गया। इसमें पं0 शिवकुमार शास्त्री (दिल्ली) द्वारा यज्ञ एवं प्रवचन से निकटवर्ती ग्राम एवं कस्बों में प्रात:-सायं को लाभान्वित किया गया। योगीराज कृष्ण के वास्तविक स्वरूप की जानकारी दी। श्याम सिंह प्रधान व मोलक चन्द आर्य ने कहा कि रसौती, हुमऊकला, नौरंगपुर आदि अनेक ग्रामों के साथ रामपुर मनिहारान में कार्यक्रम किये गये।

thearyasamaj.org

मंचासीन प्राचार्या सरिता रंजन गौतम, अर्जुनदेव चड्ढा, अरविन्द पाण्डेय, शोभाराम आर्य व उपस्थित छात्र-छात्राएं- केसरी।

# वेद हमारी अमूल्य धरोहर : सरिता रंजन

कोटा ( अरविन्द पाण्डेय )। वेद हमारी अमूल्य धरोहर हैं। विश्व का सारा ज्ञान वेदों में है तथा मानव मात्र के कल्याण व श्रेष्ठ जीवन जीने का संदेश देते हैं वेद। संस्कृत में रचित वेद के मंत्रों को सस्वर पठन करने से वे शीघ्र याद होते हैं। जैसे कि संगीतमय भजन सुनने से हमारे मानस पटल पर अंकित हो जाते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा कि वेद आधारित जीवन मनुष्यों को परमात्मा के निकट लाता है। उक्त विचार सरिता रंजन गौतम प्राचार्य डी0ए0वी0 स्कूल ने महर्षि दयानन्द अन्नपूर्णा स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए व्यक्त किये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्य समाज के जिला प्रधान श्री चड्ढा ने कहा कि विनम्रता सफलता की कुंजी है। विनम्र व्यक्ति का समाज में सम्मान होता है तथा विनम्र व्यक्ति फल लगे वृक्ष के समान है, जो सबको अपनी ओर आकर्षित करता है। डी0ए0वी0 के धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य ने विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा से संबन्धित जानकारियां देते हुए भारतीय संस्कृति के पठन-पाठन की बात की। विद्यालय की प्राचार्या लक्ष्मी राव ने कहा कि हमें मानवता अपनानी चाहिए, जिसके लिए वेदज्ञान हमारा मार्गदर्शन कर सकता है।

शीघ्र प्रकाशित हो रहे हैं
आर्यावर्त केसरी के
आगामी विशेषांक
(१) आर्यजगत के कवि विशेषांक (२) आर्यजगत के दर्शनीय ऐतिहासिक स्थल विशेषांक (३) आर्यजगत द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्प विशेषांक तथा ऐसे ही अन्य अनेक विशेषांक...

# वेद सृष्टि की प्राचीनतम पुस्तक : शोभाराम

अरविंद पाण्डेय
कोटा।

सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आकाश एवं अंगिरा इन चारों ऋषियों की पवित्र आत्माओं में जो पवित्र ज्ञान अवतरित हुआ, वह वेद है। विश्व की सबसे प्राचीनतम पुस्तक वेद है। इसे विश्व स्वीकार करता है। उक्त विचार धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य ने महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति कोटा द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कोटा में व्यक्त किए। मुख्य अतिथि जिला आर्य समाज कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने कहा कि ज्ञान-विज्ञान की समस्त शिक्षा व आविष्कार वेद में हैं। वेद शिक्षा का मूल उद्देश्य संस्कार निर्माण है जिससे विद्यार्थियों को श्रेष्ठ मानव बनने की प्रेरणा मिलती है। डी.ए.वी. के विद्यार्थी यहां शिक्षा के साथ संस्कार ग्रहण करके समाज में इसकी सुगन्ध फैलाएं।

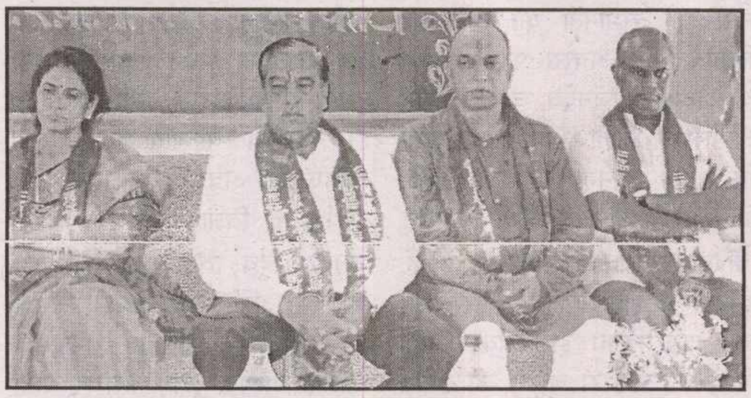

मंचासीन प्राचार्या सरिता रंजन गौतम, जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, अरविन्द पाण्डेय व शोभाराम आर्य- केसरी

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्या सरिता रंजन गौतम ने कहा कि प्रातःकाल विद्यालय का प्रारम्भ प्रतिदिन यज्ञ से होता है। जिसमें अलग-अलग कक्षाओं के विद्यार्थी वेद मंत्रों से आहुति देते हैं एवं वेद के अनुसार नैतिक शिक्षा दी जाती है। डी.ए.वी. से शिक्षा प्राप्त कर अनेक हस्तियों जैसे अटल बिहारी वाजपेयी, इन्द्रकुमार गुजराल, अमर्त्यसेन, कल्पना चावला, मिल्खा सिंह, युवराज सिंह, शाहरूख खान आदि ने देश-विदेश में ख्याति अर्जित की। कार्यक्रम के प्रारम्भ में विद्यालय प्रांगण में पधारने पर आर्यसमाज से पधारे अतिथियों अर्जुनदेव चड्ढा, हरिदत्त शर्मा, रामप्रसाद याज्ञिक, अरविन्द पाण्डेय, नरेन्द्र विजयवर्गीय, चन्द्रमोहन कुशवाह, रघुराज सिंह, प्रभू सिंह कुशवाह का स्वास्तिवाचन के मंत्रों से उच्चारण एवं तिलक लगाकर स्वागत किया गया एवं गायत्री मंत्र से सुसज्जित केसरिया पटका पहनाकर अभिनन्दन किया गया।

वहीं दूसरी ओर 2 सितम्बर को कोटा के होनहार विद्यार्थी यज्ञेश आर्य को आर्यसमाज गायत्री विहार के तत्वावधान में आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में डी.ए.वी. स्कूल की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम ने शॉल ओढ़ाकर व आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर आर्यसमाज गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय, आर्यसमाज विज्ञाननगर के प्रधान जे.एस.दुबे, वेद प्रचार समिति के संस्थापक प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक, अन्य अतिथि व आर्यजन उपस्थित थे।

# बालिका श्रीया बोम्मू का आर्यसमाज ने किया सम्मान

उमेश कुर्मी
कोटा।

अन्नपूर्णा पब्लिक स्कूल की नवीं कक्षा की छात्रा नन्हीं कलाकार, कत्थक नृत्यांगना श्रीया बोम्मू को महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति ने एक सादा कार्यक्रम में गायत्री मंत्र लिखित रेशमी पटका पहनाकर तथा ओउम् का स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। बालिका को सम्मानित करने वालों में आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, डी0ए0वी0 स्कूल की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम, आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक, समिति के प्रधान अरविन्द पाण्डेय, मंत्री प्रभूसिंह कुशवाहा, शोभाराम आर्य आदि प्रमुख थे।

राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना चुकी कोटा की नन्हीं कलाकार श्रीया बोम्मू को स्वतंत्रता दिवस पर उदयपुर में मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया है।

आर्यावर्त केसरी वर्गीकृत विज्ञापन कॉलम में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं- व्यवस्थापक

वार्षिकोत्सवों, आर्य पर्वों तथा विभिन्न कार्यक्रमों में भजनोपदेश के लिए सम्पर्क करें

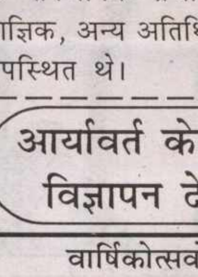

पं. घनश्याम प्रेमी आर्य
ग्राम- मुस्तफाबाद, पो०- जानसठ
जि०- मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)- 251314
चलभाष : 09927728710

विश्वव्यापी आर्यसमाज के समाचार
आर्यसमाज की आधिकारिक वेबसाइट पर
www.aryasmaj.com
अपनी संस्था की सूचनाएं भी अपलोड कर सकते हैं।
अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

thearyasamaj.org



वेदप्रचार सप्ताह पर विशेष कवरेज

वेदप्रचार समारोह में उपस्थित आर्यजनों का सुन्दर दृश्य- केसरी।

# वेदों के ज्ञान से भारत विश्वगुरु

अरविन्द पाण्डेय
कोटा।

वेदों के ज्ञान से ही भारत विश्वगुरु बना था। वेद में विद्यमान दिव्य ज्ञान ही भारत की राष्ट्रीय धरोहर है। वेद मानव मात्र के लिए है। इसमें सम्पूर्ण मानव जाति के विकास के सूत्र निहित हैं। उक्त विचार आर्यसमाज कोटा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति द्वारा विद्यालयों में वेद प्रचार कार्यक्रम के समापन के अवसर पर सर्वोदय पैरामाउण्टेन स्कूल विज्ञान नगर कोटा में आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि विश्वबन्धुत्व, विश्वशांति और विश्वकल्याण के जो तत्व वेद में हैं, वे वैश्विक हैं। विदेशी भी वैदिक ज्ञान के कायल हैं। इसमें विद्यार्थियों के लिए भी बहुमूल्य संदेश दिया गया है। इस अवसर पर कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रत्ना जैन महापौर नगर निगम, कोटा ने कहा कि वेदों का स्वाध्याय अपनी जड़ से जुड़ाव है। जैसे जड़ से ही वृक्ष फलता है, फैलता है, वैसे ही वेदों के पठन से व्यक्तित्व का विकास होता है। वैदिक ज्ञान, विज्ञान पर आधारित है। इसे आज के वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि सरिता रंजन गौतम प्राचार्या डी0ए0वी0 स्कूल, कोटा ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने नारी को समानता का अधिकार दिलाया। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा प्रधान आर्यसमाज जिला सभा कोटा ने कहा कि महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने यह अनुभव किया कि लोग वैदिक ज्ञान को भूलते जा रहे हैं, इसलिए उन्होंने 'वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया। इसी प्रकार युवा पीढ़ी को वेदों से जोड़ने का हमारा संकल्प है। सर्वोदय ग्रुप ऑफ ऐजूकेशन के चेयरमैन ए0जी0 मिर्जा ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने उद्‌बोधन में कहा कि देश में रहने वाला हर व्यक्ति भारतीय है, और हमें भारत से जुड़ी प्रत्येक मान्यता का ज्ञान होना चाहिए। जब हम एक दूसरे को जानेंगे, तभी हमारा सही विकास होगा। इसलिए हमें वेदों का स्वाध्याय जरूर करना चाहिए। इस अवसर पर कार्यक्रम में आर्यसमाज विज्ञान नगर के प्रधान जे0एस0 दुबे, विद्वान डॉ0 के0एल0 दिवाकर, आर्यसमाज तलवंडी के मंत्री भैरूलाल शर्मा, विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक, श्रीचन्द्र गुप्ता, लालचंद आर्य, पुरोहित क्षेत्रपाल, आर्यसामज रामपुरा के चन्द्रमोहन कुशवाहा, आर्यसमाज तिलक नगर छावनी के प्रधान ओमप्रकाश तापड़िया, मंत्री नरेन्द्र विजयवर्गीय, आर्यसमाज रेलवे कालोनी के मंत्री कर्णसिंह, रामचरण आर्य, आर्यसमाज भीमगंज मण्डी सूरजमल त्यागी, मंत्री धीरेन्द्र गुप्ता, अजय सूद, बी0आर0 त्यागी, उदय प्रकाश अस्थाना, गायत्री विहार के विनय मेहता, डी0ए0वी0 कोटा के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य तथा सर्वोदय विद्यालय कोटा के अध्यापक, अध्यापिकाएं तथा बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। सर्वोदय स्कूल की प्राचार्या कुसुम विजय वर्गीय ने आगन्तुक अतिथियों का आभार व्यक्त किया। शातिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

# शिक्षक राष्ट्र के निर्माता : अर्जुन देव

अरविंद पाण्डेय
कोटा।

बालकों में सुसंस्कार परिवार से प्रारम्भ होते हैं। बड़ा होने पर उन्हीं संस्कारों के आधार पर अपने परिवार, अपने समाज, अपने कार्यक्षेत्र में व्यक्ति प्रतिष्ठा पाता है। मेरे गांव में कोई भी व्यक्ति धूम्रपान नहीं करता, न ही शराब का सेवन करता है। इसका कारण है कि पांचवी कक्षा से ही बालक को परिवार में गीता, रामायण व धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन अनिवार्य रूप से कराते हैं। उक्त विचार जिला शिक्षा अधिकारी तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गंगाधर मीणा ने राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय तलवंडी में वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए।

जिला शिक्षा अधिकारी गंगाधर मीणा को सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते अर्जुनदेव चड्ढा व अरविन्द पाण्डेय- केसरी।

मीणा ने कहा कि मैंने स्वयं अजमेर की लाईब्रेरी से वेद लेकर उनका अध्ययन किया है। कार्यक्रम के अध्यक्ष आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र के निर्माता हैं जो विद्यार्थियों को उसकी रूचि एवं योग्यता के अनुसार संस्कारित करके श्रेष्ठता की ओर ले जाता है जिससे देश के लिए शिक्षित संस्कारित और होनहार नागरिक बनकर राष्ट्र निर्माण में वह अपनी अहम भूमिका निभाता है। आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने कहा कि वेदों में ज्ञान का अथाह भण्डार है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सभी को वेद पढ़ने का अधिकार की बात सर्वप्रथम कही।

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति द्वारा वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम के समिति के प्रधान अरविन्द पाण्डेय ने वेद मंत्रोच्चारण कर उसका भावार्थ करते हुए कहा कि वेद की शिक्षाओं के माध्यम से सत्य-असत्य, ज्ञान-अज्ञान, अच्छा-बुरा, उचित-अनुचित का विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है। समिति के मंत्री प्रभू सिंह कुशवाहा ने सभी उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए विद्यालय प्रशासन से भी अपने वेद प्रचार कार्यक्रम आयोजित करने हेतु धन्यवाद दिया।

## मकर सौर संक्रान्ति पर
## अखिल भारतीय संगोष्ठी

मेरठ। आगामी 13-14 जनवरी को मकर सौर संक्रान्ति के अवसर पर अखिल भारतीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा, जिसका विषय होगा ''वैदिक वाङ्मय में देवताओं का स्वरूप''।

स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला, मेरठ (उ0प्र0) में इस राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु विद्वानों से उनके वैदुष्यपूर्ण लेख (Walkman Chanakaya 901) में टंकित कराकर pavamani1986@gmail.com पर मेल करने तथा लेख का प्रकाशित प्रारूप (Printout) गोष्ठी में पढ़ने हेतु साथ लाने का निवेदन किया गया है। बताया गया कि Soft एवं Hard Copy उपलब्ध होने पर ही स्तरीय लेख 'पावमानी' शोध पत्रिका में प्रकाशित किये जाएंगे।

मुद्रण/प्रकाशन सुविधा हेतु सम्पर्क करें
आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा
ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध।
इच्छुक महानुभाव/संस्थाएं प्रकाशन हेतु तुरन्त सम्पर्क करें।
-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, श्रीराम इं० कालेज के पीछे, अमरोहा, फोन : (05922-262033/ 09758833783/ 08273236003)

thearyasamaj.org

ऋग्वेद || ओ३म् || यजुर्वेद

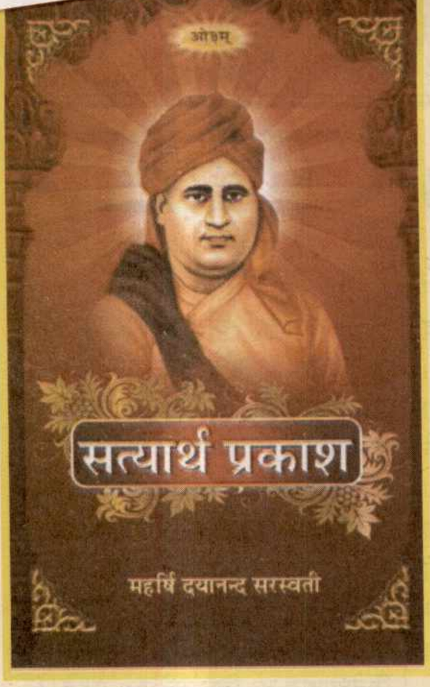


# 'सत्यार्थ प्रकाश'

## के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

### ● पहली बार लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

- तकि आगामी पाँच वर्षों में विश्व के कोने–कोने तक उन सभी महानुभावों के घरों तक महर्षि के इस क्रांतिकारी ग्रन्थ को पहुँचाया जा सके, जो आर्यसमाजी हैं अथवा जिनकी आस्था ऋषिवर दयानन्द के विचारों में है।
- ऋषि का ऋण हम सभी पर है। इससे उऋण होने के लिए इस 'मिशनरी' योजना में आप भी अपनी पुनीत भागीदारी कर सकते हैं।
- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। इसका पहला संस्करण इसी वर्ष अक्टूबर माह में ऋषि निर्वाण दिवस पर आ रहा है।

**विशेष :** प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' के अंत में प्रकाशित किये जाएंगे।

## ।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं। कोई भी महानुभाव कम से कम रु0 500/– तथा इससे अधिक लाखों तक भेंट करके इस मिशन को गति प्रदान कर सकते हैं। न्यूनतम 1000/– रुपये या अधिक राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की उतनी ही प्रतियों में उन महानुभावों के चित्र भी छपेंगे।
- प्रत्येक आर्यसमाज न्यूनतम रु0 3100/– भेंट कर सकता है। रु0 3100/– की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी। आर्यसमाज इन प्रतियों को अपने सदस्यों के घर–घर तक पहुंचा सकता है।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/– (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/– (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/–, 3100/–, 2100/–, 1100/– या 500/– की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 व 05 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।
- सभी महानुभाओं के रंगीन फोटो तथा नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' के अन्त में उनकी धनराशि के अनुसार 'सत्यार्थप्रकाश निधि में सहयोगी दानदाता–महानुभाव' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाएंगे, साथ ही, उन सभी महानुभावों के रंगीन चित्र 'आर्यावर्त केसरी' में भी 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि' स्तंभ के अन्तर्गत नियमित रूप से प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकार आपके पावन सहयोग की कीर्ति विश्व भर में कहीं भी गुंजायमान हो सकेगी।

## : प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 18 प्वाइंट (सभी आयुवर्ग के महानुभावों द्वारा सुगमतापूर्वक पठनीय)
5. सत्यार्थ प्रकाश के आवरण पृष्ठ के अन्दर 'प्रेमोपहार' की एक पट्टिका रहेगी, जिसका उपयोग किसी को उपहार स्वरूप निःशुल्क भेंट करने के लिए किया जा सकेगा। उस पट्टिका पर पाने वाले तथा भेंटकर्ता के नाम व पते के लिए स्थान रिक्त रहेगा।
6. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे, जैसे– ■ महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि, बोधप्राप्ति स्थल; शिवालय व अन्य सम्बन्धित स्थलों के चित्र– टंकारा। ■ महर्षि दयानन्द दीक्षास्थली– मथुरा। ■ आर्य समाज– कांकरवाड़ी, मुम्बई। ■ पाखण्डखण्डिनी पताका स्थली (वैदिक मोहन आश्रम), हरिद्वार ■ राजा जयकिशनदास की कोठी, मुरादाबाद ■ नवलखा महल, उदयपुर ■ वैदिक यंत्रालय, अजमेर ■ महाराजा जोधपुर का महल, जोधपुर ■ महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, भिनाय कोठी, अजमेर आदि के चित्र।
7. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ होगी तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का लागत मूल्य लगभग रु0 100/– प्रति ग्रन्थ होगा।

**उपर्युक्त के सन्दर्भ में आपके बहुमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत है।**

## : सभी आर्य बन्धुओं से सादर निवेदन :

■ प्रत्येक आर्य समाज व आर्य परिवारों के घर पर 'सत्यार्थ प्रकाश' होना चाहिए, ताकि हमारे बच्चे भी सरलतापूर्वक महर्षि की विचारधारा से परिचित हो सकें। ■ शुभ विवाहों, जन्मोत्सवों, वैवाहिक वर्षगांठों, सेवानिवृत्ति, उद्घाटन, शिलान्यास व ऐसे ही अन्य अवसरों पर पुरस्कारस्वरूप 'सत्यार्थप्रकाश' भेंट करें। ■ विविध प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों के माध्यम से 'सत्यार्थप्रकाश' घर–घर पहुंचाएं तथा विभिन्न संस्थानों, स्कूल–कालेजों व पुस्तकालयों को अपनी ओर से 'सत्यार्थप्रकाश' निःशुल्क अथवा सशुल्क भेंट करें।

## : अनुरोध :

➔ कृपया 'सत्यार्थ प्रकाश' की प्रतियों के अपने ऑर्डर्स अभी से बुक कराकर इस प्रकाशन महायज्ञ में अपनी ओर से पावन आहुति प्रदान करें।

➔ कृपया अपना ऑर्डर निम्न पते पर भेजें तथा सहयोग/ राशि भी इसी पते पर भेजकर ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' को जन–जन तक पहुंचाने का पुण्य कार्य करें/ करवाएं। सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' अमरोहा के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं0 30404724002 अथवा सिंडिकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता संख्या : 88222200014649 में भी सीधे जमा करायी जा सकती है। इसकी सूचना पत्र अथवा चलभाष द्वारा हमें अवश्य दें। ताकि यथासमय पावती रसीद आपकी सेवा में प्रेषित की जा सके। धन्यवाद,

**: विशेष :**
कोई भी धनराशि अग्रिम भेजना ही आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित कर दिये जाएंगे। धन्यवाद

**पता– 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रकाशन निधि (द्वारा – डॉ. अशोक कुमार आर्य)**

आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इण्टर कालेज, अमरोहा–244221

Ph. : 05922-262033, 09412139333, 09758833783, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद अथर्ववेद

# ज्ञान के सागर चारों वेद

आचार्य भगवान देव वेदालंकार

**१. वेद का अभिप्राय :**

'वेद' ज्ञान-विज्ञान के सागर हैं। महर्षि यास्क के अनुसार वेद में मुख्य रूप से तीन भावनाएं दृष्टिगोचर होती हैं- (1) 'विद्' ज्ञाने अर्थात् वेद पढ़ने और सुनने से ज्ञान प्राप्त होता है। (2) 'विद्' लाभे अर्थात् वेद के ज्ञान प्राप्त करने से लाभ ही लाभ होता है। हानि कुछ भी नहीं होती। (3) 'विद्' प्रतिष्ठायाम् सत्तायाम् वा अर्थात् वेद-ज्ञान से मुनष्य का, ज्ञानी व्यक्ति का सम्मान बढ़ता है। प्रतिष्ठा-इज्जत बढ़ती है। किसी कवि का यह कथन सत्य ही है कि- ''वेद हमारा धर्म है, आर्य हमारा नाम।/ एक प्रभु को पूजना यही सज्जन का काम।।'' (4) 'विद्' विचारे अर्थात वेद का ज्ञान विचार के योग्य है। अच्छे विचारों का भण्डार है।

यथार्थ में देखा जाए, तो वेदों में कर्तव्य-कर्मों का सूत्र रूप में उल्लेख है। 'विद्' के अनुसार मनुष्य अपने कर्तव्यों को समझे। जाने और तदनुसार अपने धर्म का पालन करे।

स्वनामधन्य ज्ञानिनामग्रगण्य महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने आर्यसमाज के तीसरे नियम के अनुसार वेदों को सभी सत्य विद्याओं का मूल बताया है- ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।''

**२. वेद किसका ज्ञान है? :**

'वेद' वह ईश्वरीय सत्य ज्ञान है जो सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मनुष्यों के कल्याण के लिए ऋषियों के माध्सम से प्रदान किया है। वेद अपौरुषेय हैं। जिन ग्रन्थों की रचना मनुष्य द्वारा की जाती है, उन्हें पौरुषेय कहा जाता है। 'वेदों का ज्ञान' परमात्मा द्वारा चार ऋषियों को अलग-अलग समाधि अवस्था में, जब वे ऋषि ईश्वर का अनन्य मन से ध्यान कर रहे थे, ऐसे उन पवित्र अन्तःकरण वाले ऋषियों को सुपात्र जानकर दिया गया।

**३. साक्षात्कारकर्ता ऋषि एवं वेदों के नाम :**

ऋषियों को वेद के ज्ञान की प्रेरणा ईश्वर ने समाधि-अवस्था में की।

(1) ऋग्वेद का ज्ञान 'अग्नि ऋषि' को प्राप्त हुआ। ऋग्वेद में ऋचाएं हैं। ऋच्यते स्तुयते अनेन इति 'ऋचा' अर्थात् जिन मंत्रों के माध्यम से ईश्वर की स्तुति की जाए। 'ऋग्वेद' आकार की दृष्टि से, मंत्रों की संख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा है, सबसे अधिक प्राचीन है। ऋग्वेद विज्ञानपरक है। ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है। ऋग्वेद में 10 मण्डल हैं, 1028 सूक्त हैं, और 10552 मंत्र हैं।

(2) 'यजुर्वेद' का ज्ञान 'वायु ऋषि' को प्राप्त हुआ। विषय की दृष्टि से यजुर्वेद कर्मकाण्ड परक है। इसमें अनेक प्रकार के यज्ञों का वर्णन है। इसमें मानव-कल्याण के लिए दिशा-संकेत हैं। 'यजुः गद्यात्मको' यजुर्वेद के मंत्र दीर्घ स्वर में लय के साथ समगति में बोले जाते हैं। इसमें 40 अध्याय और 1975 मंत्र हैं।

(3) 'सामवेद' का ज्ञान 'आदित्य ऋषि' को प्राप्त हुआ। इस वेद का विषय उपासना है। इसमें परमपिता परमेश्वर की स्तुतियां, प्रार्थनाएं भरी पड़ी हैं। गान-विद्या, संगीत का यह मूलाधार है। सामवेद को दो भागों में बांटा गया है- (1) पूर्वार्चिक और (2) उत्तरार्चिक। सामवेद में 9 प्रपाठक, 29 अध्याय और 1875 मंत्र हैं। सामवेद के मंत्रों का उच्चारण उत्यंत लयबद्ध होकर मधुर स्वर में गया जाता है। इन मंत्रों का मधुर गान सुनकर अशांत व्यक्ति भी शान्त हो जाता है।

(4) अथर्ववेद'का ज्ञान 'अंगिरा' ऋषि को प्राप्त हुआ। अथर्व वेद का विषय ज्ञानपरक है। इसमें शेष तीनों वेदों का सार है। अनेक प्रकार की औषधियों का वर्णन, रोगों के उपचार का विधान, राजा-प्रजा के कर्तव्य, मानवीय व्यवहार का ज्ञान-विज्ञान कूट-कूट कर भरा पड़ा है। अथर्ववेद में 20 काण्ड, 760 सूक्त और 5977 मंत्र हैं।

**४. चारों वेद संसार का उत्तम संविधान :**

चारों वेदों के ज्ञान को यदि हम संसार का सर्वोत्तम संविधान कहें, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसमें हर प्रकार की सत्य विद्या का ज्ञान दृष्टिगोचर होता है। चाहे वह उपासना और भक्ति हो। संसार में किस प्रकार रहना है? कैसा व्यवहार करना है? किसका क्या कर्तव्य है? तथा किन-किन नियमों का पालन करना है? ईश्वर ने मानव के कल्याण के लिए संविधान के रूप में मानव को वेदज्ञान प्रदान किया है। वेद मनुष्य के लिए अमूल्य निधि के समान हैं।

**५. वेद पढ़ना और सुनना सर्वोत्तम धर्म :**

'धृञ धारणे' इस धातु से धर्म शब्द सिद्ध होता है, जिसका अर्थ है धारण करना। महर्षि वेदव्यास भी इसी भावना से धर्म का भाव करते हैं- ''धारणात् धर्मम् इत्याहु'' धर्म एक उत्तम कर्तव्य कर्म है, जो धारण किया जाता है। परमपिता परमात्मा की सृष्टि के आरम्भ में जब मनुष्य का निर्माण किया गया, तब उसके लिए दिशाबोध कराने के लिए सर्वोत्तम वेदों को ज्ञान प्रदान किया गया वेदों में प्रभु ने अन्य विद्याओं के साथ-साथ मानवीय धर्म का भी बहुत सुन्दर उपदेश किया है। इसीलिए महर्षि मनु ने कहा है कि- ''वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'' (मनुस्मृति 2/6) अर्थात् वेद सम्पूर्ण धर्म का, कर्तव्य कर्मों का मूल है। ''धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः'' (मनु0 2/13) अर्थात् धर्म को जानने वालों के लिए वेद ही परम प्रमाण है। इसलिए वेद का पढ़ना और पढ़ाना सर्वोत्तम धर्म है।

**६. वेद पढ़ने और सुनने का अधिकार किसको है?**

सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में किसी ने वेदों के आचार्य स्वामी दयानन्द जी से भी प्रश्न किया-

प्रश्न- क्या स्त्री और शूद्र भी वेद पढ़ें? जो ये पढ़ेंगे, तो हम फिर क्या रकेंगे, और इनके पढ़ने में प्रमाण भी नहीं है, जैसा कि यह निषेध है- ''स्त्री शूद्रौ नाधीयातामिति श्रुतेः'' अर्थात् स्त्री और शूद्र वेद न पढ़ें, यह श्रुति है।

समाधान- सब स्त्री और पुरुषों को वेद पढ़ने और सुनने का अधिकार है। तुम कुआ में पड़ो, और यह श्रुति तुम्हारी कपोल कल्पना से बनायी हुई है, किसी प्रमाणिक ग्रन्थ की नहीं है। और सब मनुष्यों के वेदादि शास्त्र पढ़ने-सुनने का अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद में है-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्म राजन्याभ्याꣳ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।। (यजुर्वेद, 26-मं0 2)

अर्थात् परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिए इमाम् (कल्याणीम्) कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने हारी (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हूं, वैसे तुम भी किया करो। (ब्रह्मराजन्याभ्याम्) परमेश्वर स्वयं कहता है कि हमने ब्राह्मण, क्षत्रिय, (अर्य्याय) वैश्य, (शूद्राय) शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य वा स्त्रियादि (अरणाय) और अति शूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है। अर्थात् 'सब मनुष्य' वेदों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुनाकर विज्ञान को बढ़ा के अच्छी बातों का ग्रहण और बुरी बातों का त्याग करके दुखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त हों।

**७. वेद-निन्दा करने वाला व्यक्ति नास्तिक है :**

'वेद' परमेश्वर की अमृतवाणी है। जो कोई इसको न मानेगा, वह नास्तिक कहाएगा, क्योंकि 'नास्तिको वेद निन्दकः' वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहलाता है। जैसे परमेश्वर ने पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनये हैं, वैसे ही वेद भी सबके लिए प्रकाशित किये हैं। इसलिए वेद पढ़ने और सुनने का अधिकार मानवमात्र को है। वेद पढ़ने का किसी के लिए निषेध नहीं है।

आर्यजगत के प्रतिभा सम्पन्न कविवर सत्यपाल पथिक ने अपनी कविता 'वेद ज्ञान का सागर है' में वेदों की गरिमा का सुन्दर वर्णन किया है-

ज्ञान का सागर चार वेद,  
यह वाणी है भगवान की।  
इसी से मिलती सब सामग्री,  
जीवन के कल्याण की।।  
सब सच्ची विद्याएं जग में  
प्रकट वेद से होती हैं।  
यहीं से जाकर सब नदियां,  
पृथ्वी का आंगन धोती हैं।।  
उसी को जीवन सार मिला  
जिसने इसकी पहचान की।  
ज्ञान का सागर चार वेद,  
यह वाणी है भगवान की।।1।।  
सृष्टि एक अदालत है और  
न्यायाधीश विधाता है।  
यहीं पर ही हर प्राणी अपने  
कर्मों का फल पाता है।।  
वेद के अन्दर सब रचना है  
विधि के अमर विधान की।  
ज्ञान का सागर चार वेद,  
यह वाणी है भगवान की।।2।।  
वेद का पढ़ना और पढ़ाना  
परम धर्म कहलाता है।  
सुनना और सुनाना भी  
कर्तव्य महान बताया जाता है।।  
वेद ही असली दौलते है  
दुनिया के हर इंसान की।  
ज्ञान का सागर चार वेद,  
यह वाणी है भगवान की।।13।।  
धन्य धन्य भारत भूमि  
जिस पर वेदों का गान हुआ।  
वेद का अमृत पिया पिलाया  
तब यह देश महान हुआ।।  
'पथिक' पुण्य भूमि है यह तो  
ऋषियों की सन्तान की।  
ज्ञान का सागर चार वेद,  
यह वाणी है भगवान की।।1।।

-विकास नगर, फेस- तीन  
हस्तसाल एरिया  
निकट- बालाजी मन्दिर  
नई दिल्ली-59  
मोबा. : 9250906201

## प्रतिक्रिया

डॉ. सत्यदेव आजाद

आर्यावर्त केसरी (1 से 15 जुलाई 14) अंक के पृष्ठ 7 पर वैचारिक प्रवाह स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित श्री इन्द्रदेव गुलाटी की प्रतिक्रिया के सन्दर्भ में दयानन्द एंग्लो वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर के प्राचार्य से यह अपेक्षा की जाती है कि वातायन (12-13) के मुखपृष्ठ पर छपे स्वामी विवेकानन्द के चित्र को वह पहचानें और दयानन्द के चित्र से उसका मिलान करें। एक पी0जी0 शिक्षण संस्थान के महत्वपूर्ण पद पर होते हुए उन्हें अपनी इस भूल के प्रति सार्वजनिक रूप से आर्य जगत के समक्ष खेद व्यक्त करना चाहिए। भले ही तत्कालीन प्राचार्य वह न हों। 'विद्या ददाति विनयम्' के अनुसार प्राचार्य जी को उक्त बड़ी चूक (ब्लन्डर) हेतु खेद व्यक्त करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

-डॉ० सत्यदेव आजाद  
२३/३ अर्जुनपुरा,  
डीग गेट, मथुरा

## पर्यावरण बढ़ाएं

कृष्ण मोहन गोयल

समस्त पर्यावरण प्रेमियों से नम्र निवेदन है कि आगामी वर्षा ऋतु में यथासमय पीपल, बरगद, नीम, जामुन के वृक्षों का ही रोपण करें। ये वृक्ष सदियों तक हमें शीतल छाया प्रदान करते हैं, शुद्ध आक्सीजन के साथ-साथ हमारी धरती के श्रेष्ठ आभूषण हैं। उल्लेखनीय है कि समस्त आर्य प्रेमी सदैव पर्यावरण की रक्षा को तत्पर रहते हैं। साप्ताहिक यज्ञ में हवन में आहुति देते समय ईश्वर से कामना करते हैं कि हमारे जीवन को समस्त व्याधियों से दूर रखे, इसलिए वट-वृक्षों को हम प्रमुख महत्व देते हैं। समस्त सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों राजनीतिज्ञों व स्कूल प्रबन्धकों से अपील है कि उपर्युक्त वृक्षों का रोपण अधिकता से करें। कम से कम तीन वर्ष की आयु तक वृक्षों के संरक्षण हेतु उनका सुरक्षा-कवच भी बनाएं।

वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र

वेद, उपनिषद, दर्शन व सभी प्रकार के वैदिक-आर्ष, सम-सामयिक साहित्य का विशद भण्डार, ध्वज, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

मूल्य ६०/- किलो

रोग विनाशनी - स्वास्थ्य प्रदायिनी  
बहुमूल्य जड़ी-बूटियों के योग से निर्मित मेवा मिश्रित

शुद्ध हवन सामग्री

हरिश्चन्द्र आर्य अधिष्ठाता - उपदेश विभाग

कार्यालय- काली पगड़ी, अमरोहा (उ.प्र.) फोन : ०५९२२-२६३४१२

thearyasamaj.org



## जाति-प्रथा का नया रूप

हाल ही में भारत सरकार ने वाई. सुदर्शन राव को भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद का अध्यक्ष नियुक्त किया है। जातिप्रथा को लेकर उनके द्वारा २००७ में जो एक ब्लॉग लिखा था, उसका शीर्षक था ''प्राचीन जातिप्रथा ने अच्छा काम किया था।'' अपने ब्लॉग में उन्होंने प्राचीन जाति- व्यवस्था की प्रशंसा की है, और कहा है कि जाति-व्यवस्था ने बाद में वर्ण-व्यवस्था का रूप ले लिया। उनका कहना है कि जाति-व्यवस्था से किसी को कोई शिकायत नहीं थी। उनके अनुसार 'बाद में धन और सामाजिक सम्मान को प्राप्त करने के लिए कुछ निहित स्वार्थी तत्वों ने इस व्यवस्था को शोषण करने वाली सामाजिक व्यवस्था में बदल दिया।'

विचारणीय है कि जाति व्यवस्था महाभारत काल के पश्चात उत्पन्न हुई इससे पहले हमारे यहां वर्ण व्यवस्था प्रचलन में थी जो गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित थी। इसमें अस्पृश्यता, छूआछूत व ऊंच नीच जैसे विभेद नहीं थे बल्कि एक समरसता थी। जाति-व्यवस्था ने समाज में असमानता व भेदभाव को जन्म दिया। यह जाति व्यवस्था की त्रासदी ही थी कि महाभारत काल में गुरु द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य का अंगूठा काटकर मांग लिया गया।

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जाति व्यवस्था के खिलाफ जनान्दोलन चलाया। उन्होंने सामाजिक समरसता व राष्ट्रीय एकता का सन्देश दिया तथा वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया। जातिप्रथा के संदर्भ में बाबा साहब अम्बेडकर ने सटीक टिप्पणी की थी कि ''जब तक भारत में जातिप्रथा विद्यमान है, तब तक हिन्दुओं में अन्तर्जातीय विवाह और बाह्य लोगों से शायद ही तालमेल हो सके। और यदि हिन्दू पृथ्वी के अन्य क्षेत्रों में भी जाते हैं, तो भारतीय जात-पात की समस्या विश्व की समस्या हो जाएगी।'' जब देश के संविधान निर्माता जाति-व्यवस्था को लेकर इस निष्कर्ष पर पहुंचे, तो वाई. सुदर्शन राव के निष्कर्ष को देश किस रूप में लेगा, यह तो समय ही बताएगा, परन्तु विद्वान होने का यह अर्थ कतई नहीं है कि देश के सामने ऐसा निष्कर्ष प्रस्तुत करें जो देश को एकता के सूत्र में बांधने के स्थान पर उसको विखंडित कर दें। ऐसे विद्वानों को समाज कौन-सा स्थान देना चाहता है, यह फैसला समाज को ही करना है।

## नैतिकता का पाठ जरूरी

समाज को नैतिकता सिखाने वाले राजनीतिज्ञ यदि पूर्वाग्रहों से ग्रसित हों तो देश तरक्की नहीं कर सकता। पूरे सिस्टम में प्रशासन की पारदर्शिता तय होना लाजमी हैं क्योंकि नेता कोई पढ़ा-लिखा विद्वान हो जरूरी नहीं है आधुनिक शान शौकत से लैस नेता धन अर्जित करने के सभी गैरकानूनी तौर तरीके अपनाते हैं। प्रशासनिक अधिकारी उसमें अपनी सहभागिता निभाते हैं। ऐसे समाज में नैतिकता का पतन आम बात है। यदि सक्षम अधिकारी ही विधि का उल्लंघन करें तो समाज विरोधी तत्व ऐसा क्यों नहीं करेंगे? नौकरशाहों को नैतिकता कौन सिखायेगा? यदि लोकतंत्र का मतलब ही लूटतंत्र हो जाए, बिना सुविधा शुल्क के कोई काम न हो, तो फिर देश कहां जायेगा?

–कान्ति बल्लभ जोशी, टनकपुर

## सम्मानित पाठक कृपया ध्यान दें

### यदि आर्यावर्त केसरी न मिले तो....

सम्मानित सदस्यों! आर्यावर्त केसरी आपकी सेवा में प्रत्येक माह की ०१ व १६ तारीख को प्रेषित किया जाता है। दस दिन तक न मिलने पर कृपया दूरभाष पर अवगत कराएं, पुनः प्रेषित किया जायेगा। कहीं-कहीं से ऐसी शिकायतें भी मिलती हैं कि उन्हें आर्यावर्त केसरी लम्बे समय से नहीं मिला है या सदस्यता सहयोग दिये जाने के बाद भी नहीं मिल रहा है, तो इस विषय में अमरोहा- कार्यालय से दूरभाष पर पुष्टि करने के बाद कृपया सम्बन्धित डाकघर के पोस्टमास्टर, अथवा सम्भव हो तो प्रवर अधीक्षक डाकघर- संबंधित प्रखण्ड, से भी इसकी शिकायत करें। हम तो, अपने स्तर पर समुचित कार्यवाही करेंगे ही, ताकि आपको केसरी यथासमय मिलता रहे और डाक के वितरण में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो।

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)
फोन- 05922-262033, 09758833783

# भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनी व उनका प्रासंगिक अलभ्य साहित्य

मनमोहन कुमार आर्य

मेहता जैमिनी जी के नाम से पाठक सम्भवतः परिचित न हों परन्तु आप आर्यसमाज के एक अनूठे प्रचारक, प्रवर विद्वान व लेखक थे। आपकी वेद सेवा के कारण आर्य समाज में महर्षि दयानन्द के बाद की प्रथम पीढ़ी की विद्वत्मण्डली में आपको मुख्य स्थान प्राप्त है। आर्य जगत के प्रमुख व वयोवृद्ध विद्वान तथा लगभग 300 छोटे बड़े ग्रन्थों के प्रणेता व लेखक प्रोफेसर राजेन्द्र जिज्ञासु ने मेहता जैमिनी का विस्तृत जीवन चरित्र लिख कर देशवासियों पर एक महान उपकार किया है अन्यथा यह विद्वान आने वाली पीढ़ियों के लिए अविदित ही रहता। इस ग्रन्थ से ही कोई पाठक चरित नायक मेहता जैमिनी के जीवन व कार्यों का परिचय प्राप्त कर सकता है। हम स्वयं भी इस जीवन चरित को पढ़ने से पूर्व मेहताजी के केवल नाम से ही परिचित थे। उनके कृतित्व का कुछ भी ज्ञान हमें नहीं था जिसका कारण उनका कोई जीवन चरित्र व उनके द्वारा लिखित कोई प्रमुख ग्रन्थ कहीं उपलब्ध नहीं था।

प्रोफेसर जिज्ञासु जी की यह पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति के लिए पठनीय एवं उपादेय है। मेहता जी के बचपन का नाम जमनादास था। उनका यह नाम बी.ए. व वकालत की शिक्षा प्राप्त करने तक रहा। आपका जन्म पश्चिमी पंजाब के कोट कमालिया कस्बे जिला लायलपुर (पश्चिमी पंजाब) में पिता श्री रामदित्तामल जी के यहां 11 अक्तूबर, 1871 को हुआ था। 16 नवम्बर, 1957 को उनकी मृत्यु अमृतसर में हुई। परिवार के दायित्वों को पूर्ण करने व आर्य समाज की सेवार्थ धनोपार्जन के लिए आपने एक शिक्षक के रूप में अनके स्थानों पर आर्य स्कूलों में जाकर सेवा की और सफल वकील भी रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के आन्दोलन में भी आपने सकिय भाग लिया था। पंडित लेखराम जी की प्रेरणा ही थी कि आपमें विदेशों में वेदों का प्रचार करने का विचार व संकल्प उत्पन्न हुआ और इस क्षेत्र में आपने अद्भुत कार्य किया, जिसका अनुमान पूरी पुस्तक को पढ कर ही पाठक लगा सकते हैं। इस विषय में माननीय जिज्ञासुजी ने अपनी पुस्तक में मेहता जैमिनी जी का एक संस्मरण दिया है जो सन् 1953 ई. में प्रकाश में आया। इसमें मेहताजी ने लिखा है कि पण्डित लेखराम जी ने उन्हें वचन दिया था कि उनके बी.ए. पास कर लेने के बाद वह दोनों इराक, बसरा व अरब में जाकर वेदों का प्रचार करेंगे। इस पुस्तक को पढ़ते हुए आपकी कुछ पुस्तकों ने हमें आकर्षित किया और इच्छा हुई कि इनका प्रकाशन व उपलब्धि होनी चाहिये। यह पुस्तकें हैं, 1-जर्मनी पर भारत का प्रभाव (उर्दू, पृष्ठ संख्या 16), 2-अमेरिकन लेडी व भारत माता (हिन्दी) और 3-आर्यसमाज के प्रचार का प्रभाव तथा अमेरिका में वैदिक सभ्यता (हिन्दी पुस्तक पृ. सं. 72) है। हमें लगता है कि यदि इनका प्रकाशन हो जाये तो यह एक उत्तम कार्य होगा। यदि प्रकाशन न भी हो तो 16 पृष्ठों वाली उर्दू पुस्तक ''जर्मनी पर भारत का प्रभाव'' का श्री जिज्ञासु जी अनुवाद कर दें। इनका प्रकाशन भी हमें लगता है कि आसानी से हो सकता है। इसके लिए हम श्री जिज्ञासु जी से प्रार्थना एवं अनुरोध करते हैं कि वह यदि सम्भव हो तो इन तीन पुस्तकों की छाया प्रति हमें प्रदान करने की कृपा करें। इनकी प्रतियां हमारे पूर्व व वर्तमान विद्वानों श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, डॉ. मेहता जैमिनी, प्रो0 राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रो0 भवानीलाल भारतीय जी आदि सहित आर्यसमाजों के पुस्तकालयों में उपलब्ध हो सकतीं हैं। इन्हें प्राप्त कर इनका पुनः प्रकाशन कराया जा सकता है। **(यदि यह पुस्तकें उपलब्ध हो जाएं तो आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की ओर से पुनः प्रकाशित करा दी जाएंगी– सम्पादक)।** साहित्य के संरक्षण का यह कार्य आसानी से किया जा सकता है। हम आर्य समाज के अधिकारी महानुभावों से इस कार्य पर ध्यान देने की अपील करते हैं।

मेहता जैमिनी, लाहौर में पं. गुरुदत्त विद्यार्थी और एक पौराणिक विद्वान पं. गौरीशंकर के मध्य शास्त्रार्थ को देखकर और उसमें पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की विजय की घटना से प्रभावित होकर कालान्तर में मुलतान में एक शिक्षक श्री गणपतराय की संगति से आर्य समाजी बने थे। यदि यह घटना घटित न होती तो आप ईसाई बन जाते जिसका आप निर्णय कर चुके थे। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एवं श्री गणपतराय जी के प्रभाव से दिनांक 11 दिसम्बर 1881 को आपने विधिवत् लाहौर नगर में आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। मेहताजी ने 22 जून 1901 को मूलतान के श्री नन्दलाल गोस्वामी ब्राह्मण जो अज्ञानता आदि कारणों से ईसाई बन गये थे, समझा-बुझाकर पुनः आर्य धर्म में प्रविष्ट कराया और उसका शुद्धि संस्कार कराया। बर्मा में तले के कुंओं के स्वामी श्री गुलाब खां को भी आपने वैदिक धर्म में दीक्षित किया था। मॉरीशस में भी आपने बीस सहस्र लोगों को शुद्ध कर आर्य धर्म में प्रविष्ट कराया। आपने दलितोद्धार व गोरक्षा के क्षेत्र में भी अविस्मरणीय कार्य किया। विदेशों में प्रचार का तो आपका अपना एक रिकार्ड था, जो सम्भवतः उनसे पूर्व व उनके बाद उतने जोश-खरोश के साथ अन्य किसी ने नहीं किया। आप अनेक देशों में गये। इनमें से बर्मा, मारीशस, थाईलैण्ड, सिंगापुर, मलाया, फिजी, पनामा, त्रिनीदाद, ब्रिटिश गायना, फ्रैंच गायना, न्यूयार्क, इटली, स्पेन, पेरिस (फ्रांस), लन्दन, सुमात्रा, जापान, कीनिया, युगाण्डा, जंजवार, टागांनीका, पुर्तगाल आदि देश प्रमुख हैं। मेहता जी संन्यास लेकर स्वामी ज्ञानानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनके साहित्य की चर्चा भी कर लेते हैं। उनके द्वारा कुल 93 पुस्तकें लिखी गईं जिनमें से कुछ हैं– न्यूजीलैण्ड और मध्य अमेरिका में वैदिक धर्म की गूंज (उर्दू, पृ. 200), श्रीमान् पं. लेखराम जी की काबिले यादगार शहादत, श्री पं. लेखराम जी की शहादत और इसके अमली नतायज, पं. लेखराम की शहादत और मिर्जा साहब की चालाकियां, जगत गुरू भारत, Sublimity of the Vedas (छोटी सी पुस्तक), गऊ माता भारत की प्राणदाता (उर्दू के 100 पृष्ठों में), भक्ति मार्ग, उपनिषदों का महत्व, गंजीना मालूमात (पृ. 354, भाग पहला, 30 व्याख्यानों का अद्भुत संग्रह), जगतगुरू दयानन्द का संसार पर जादू, सिंध में सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास पर प्रतिबन्ध पर एक उत्तम लघु पुस्तक का प्रकाशन। संस्कृत का महत्व, आर्य समाज के प्रचार का इतिहास और मेरा अपना प्रचार (उर्दू में 300 पृष्ठ), विदेशों में आर्यसमाज के प्रचार का इतिहास, मारीशस की यात्रा, स्याम देश की यात्रा, फीजी की यात्रा, शमाली अमरीका की यात्रा, पाताल देश की यात्रा, जनूबी अमरीका की यात्रा, जापान की सैर, जापान दर्पण, इण्डोनेशिया की यात्रा, जावा में रामायण, विदेशों में भारतीयों की हालत, आर्य समाज के प्रचार का प्रभाव तथा अमरीका में वैदिक सभ्यता (हिन्दी, 72 पृष्ठ), वेद में अग्नि शब्द का महत्व (उर्दू, पृ. 16), जर्मनी पर भारत का प्रभाव (उर्दू, पृष्ठ 16), अफगानिस्तान में हिन्दू सभ्यता, भारत ज्ञान का भण्डार है, भारत की स्त्रियों का आदर्श, स्वामी दयानन्द – अन्य देशीय विद्वानों की दृष्टि में, शिक्षा और राष्ट्रीयता (उर्दू), इंडोनेशिया (हिन्दी, पृष्ठ 168, उर्दू में 160 पृष्ठ), अमरीका यात्रा (हिन्दी, 90 पृष्ठ), हिन्दू जाति की अवनति के कारण आदि प्रमुख हैं।

पताः 196 चुक्खूवाला-2
देहरादून-248001
फोनः 09412985121

thearyasamaj.org



# संसद की दीवारों के संदेश

प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पहली बार संसद में प्रवेश करते समय संसद की सीढ़ियों पर सिर रखकर प्रणाम किया। इससे संसद की गरिमा बहुत बढ़ गयी है। आशा है कि सांसद महानुभाव इस भावना और गरिमा का सम्मान करेंगे।

संसद भवन की दीवारों और लिफ्टों के गुंबदों पर लिखे हुए संदेश संसद के सदस्यों, सांसदों से कुछ उम्मीद करते हैं। संसद के इन संदेशों का चयन करने वले पूर्व राजनयिकों के प्रति मन में श्रद्धा के भाव जग उठते हैं। आज के बहुसंख्यक सांसदों के पतनशील आचरण, स्वार्थी व्यवहारों पर विचार करने से इन आदर्श संदेशों का महत्व बहुत बढ़ जाता है। संसद भवन के प्रथम द्वार से होकर जब हम केन्द्रीय सभागार के प्रांगण की ओर चलते हैं, तो प्रवेश द्वार पर भारतीय संस्कृति का एक उदात्त आदर्श निम्न श्लोक में लिखा हुआ मिलता है- **''अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥''** (पंचतंत्रम्)। इसका अर्थ हुआ कि यह अपना है और यह पराया है। ऐसा विचार छोटे चित्त वालों का होता है। जो उदार चरित्र वाले होते हैं, वे तो सारे विश्व को अपना परिवार समझते हैं। आज के भूमण्डलीकरण और विश्व के बाजारीकरण और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के विश्व के संसाधनों की लूट के युग में ऐसे आदर्शों का महत्व बढ़ जाता है।

लोकसभा के सुविशाल सभागार में लोकसभा के अध्यक्ष की पीठ के पीछे दीवार पर बौद्ध युग की प्रसिद्ध सूक्ति- **''धर्मचक्र - प्रवर्तनीय''** लिखा हुआ है। इसकि अर्थ हुआ कि सांसदों को धर्मचक्र के निर्माण के लिए प्रयत्नशील बने रहना चाहिए। इस सूक्ति को देखते हुए हम संसद के सदस्यों को पंथनिरपेक्ष होने की सलाह तो सोच सकते हैं। इससे यह सुस्पष्ट है कि हमारी संसद का आदर्श धर्मनिरपेक्ष नहीं है, बल्कि संप्रदाय निरपेक्ष है। कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट आदि ईसाइयों के संप्रदाय हैं, जैन, बौद्ध, पारसी, सिक्ख सभी सम्प्रदायों में ही परिगणित हैं। इनके प्रति संसद का निरपेक्ष समान भाव होना ही इष्ट है।

धर्म तो मानव समाज को, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को धारण पालन करता है। **''धारणाद् धर्म मित्याहुः''** कहा गया है। जिस आचरण से सम्पूर्ण विश्व मनुष्य, पशु, पक्षी, प्राकृतिक संसाधन सभी का धारण, पोषण हो, वह धर्म कहलाता है। मनु महाराज ने कहा है- **धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयम् शौच विन्द्रिय निग्रहः। धीर विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणं॥** इसी के साथ अहिंसा और जोड़ देने से धर्म के ग्यारह लक्षण हो जाते हैं। राज्यसभा के एक प्रवेश द्वार पर धर्म की व्याख्या लिखी हुई है- **अहिंसा परामोधर्मः।** राष्ट्रपिता गांधी जी की सभाओं में गाया जाता था- वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाने रे। आज के युग में हमारी संसद में जोर जबरदस्ती से अपनी बात मनवाने का प्रयास होता है

संसद की दीवारों पर जहां भी भारत का राजचिह्न अंकित है। वहां सर्वत्र लिखा हुआ है- **''सत्यमेव जयते।''** इसका भाव हुआ कि सांसदों का कर्तव्य है कि वे सत्य की जीत की चेष्टा करें। यह पूरा वाक्य है- **''सत्यमेव जयते नानृतम्''।** ऋत् का अर्थ होता है उचित अनृत का अर्थ होता है अनुचित। भाव यह हुआ कि जो सत्य अनृत है, अनुचित है, उसकी जीत की चेष्टा नहीं होनी चाहिए। उदाहरण के लिए स्कैण्डल होते हैं। सांसदों का कर्तव्य है कि वे अनुचित का समर्थन न करें। आज के युग में हमारी संसद में उचित-अनुचित का विचार किये बिना पार्टी और नेताओं के समर्थन में बहुत कुछ होता रहता है। कुछ दिनों पहले राष्ट्रमण्डल के खेलों का स्कैण्डल, 2जी का मामला, कोलगेट का स्कैण्डल, सभी सत्य की निर्मम हत्या है। सत्यमेव जयते का संदेश इस तरह के आचरण को रोकता है।

राज्यसभा के एक प्रवेश द्वार पर लिखा हुआ है- **सत्यम् वद् धर्मचर।** यह तैत्तरीय उपनिषद का वचन है। इसका सुस्पष्ट संदेश है कि संसद के सत्य बोलें और धर्म का आचरण करें। हम यह देख रहे हैं कि धर्म के आचरण की अनुशंसा अनेक बार की गयी है। राज्यसभा के एक और प्रवेश द्वार पर लिखा हुआ है- **''एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति।''** (ऋग0 1/164/46)। ऋग्वेद में तो यह उक्ति परमेश्वर के संबन्ध में है, किंतु यहां संसद में इस उल्लेख का आशय यह समझ में आता है कि देशहित, देश की सुरक्षा, देश का बहुमुखी विकास सभी सदस्यों का सांझा सत्य है और सभी सदस्य मिलजुल कर आपसी समन्वय से इस सत्य को पाने का प्रयास करें। एक और प्रवेशद्वार पर भगवत्गीता का निम्न वाक्य लिखा हुआ है- **''स्वे-स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।''** (गीता- 18,45)। संसद का प्रत्येक सदस्य अपने-अपने कर्म का, कर्तव्यों का पालन करते हुए संसद के उद्देश्य की पूर्ति कर सकता है। आज हमारे बहुदलीय प्रजातंत्र में राजनीतिक दल स्वदेश के स्वार्थ को भुलाकर दलीय स्वार्थों में उलझ जाते हैं। कई बार तो सदस्यों के आपसी नोंकझोंक में लड़ाई हो जाती है। संसद के ये वाक्य दलीय स्वार्थों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय स्वार्थ की अनुशंसा कर रहे हैं।

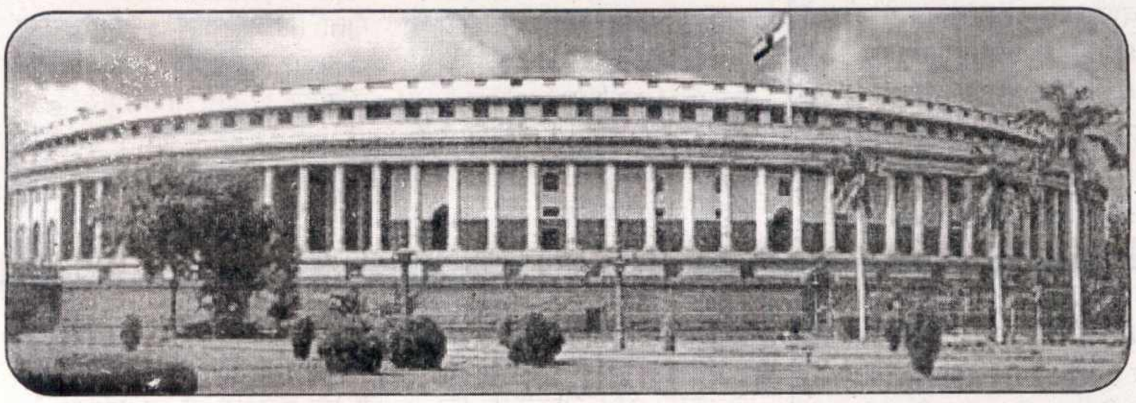

संसद की प्रथम लिफ्ट के गुम्बद पर महाभारत का निम्न श्लोक अंकित है-

**''न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः, वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्/ धर्मो न सो यत्र न सत्यमस्ति, सत्यम् न तत् यत् छलमभ्युपैति।।''** (महाभारत)

अर्थात् वह सभा या संसद, संसद नहीं होती, जिसमें वृद्ध, वरिष्ठ, ज्ञानवृद्ध, अनुभववृद्ध अर्थात् ज्ञानी और अनुभवी लोग न हों। वे वरिष्ठ वृद्ध जन भी नहीं हैं, जिनके वक्तव्य राष्ट्रधर्म और राष्ट्रहित में न हों। राष्ट्रधर्म भी ऐसा हो, जिसमें छल-कपट भरा न हो। इस संदेश का आशय यह है कि हमारे राष्ट्रधर्म, हमारी राजनीति जितना पारदर्शी हो, हमारे राष्ट्रधर्म में जितना छल-कपट कम होगा, उतना ही हमारे राष्ट्र और हमारी संसद की गरिमा बढ़ेगी।

लिफ्ट क्रमांक दो के गुम्बद पर मनुस्मृति का निम्न श्लोक लिखा हुआ है-

**''सभा वा न प्रवेष्टव्या वक्तव्यम् वा समंज्जसम्। अब्रुवन्, विब्रुवन् वापि नरो भवति किल्मिषी।।''** (मनु0 8/13)

यह आदेश सभासदों को उनके आचरण की गरिमा के प्रति सतर्क करता है। इस श्लोक का भावार्थ यह है कि सभासद सभा में प्रवेश न करें, यह तो उनकी इच्छा पर है (हम यह समझते हैं कि जब कोई संसद का सदस्य बन जाता है, तो वह संसद में प्रवेश कर चुका, उसे अनुपस्थित होने का अधिकार नहीं है)। सभासद जब संसद के सदस्य बन चुके, तो उन्हें राष्ट्रधर्म के अनुकूल ही बोलना चाहिए। जो सदस्य संसद में बोलेगा ही नहीं या झूठ बोलेगा, वह पाप करेगा। हम पिछली लोकसभा क राष्ट्रमण्डलीय खेलों, 2जी के घोटाले और कोलगेट के घोटाले के प्रसंग में देख चुके हैं कि पिछली संसद में कैसे-कैसे छल हुए हैं।

लिफ्ट क्रमांक तीन पर लिखा हुआ है-

**''दया मैत्री च भूतेषु दानम् च मधुरा च वाक्। न ही दृशम् संवननं त्रिषुपलोकेषु विद्यते।।''** (महाभारत, विदुर नीति)

इसका भाव यह है कि प्राणी मात्र पशु, पक्षी, मनुष्य आदि सबके प्रति दया, प्राणी मात्र से मित्रता, मधुर वचन और दान देने की प्रवृत्ति (केवल धनदान नहीं या भूमिदान ही नहीं, बल्कि श्रमदान, विद्यादान आदि)। संसार में दुर्लभ है। इस सूक्ति का यह आशय है कि सभासद, जनप्रतिनिधि इन मानव गुणों से अपने को परिपूर्ण बनाये रखे। लिफ्ट क्रमांक चार पर शासक के राजधर्म पालन का मार्गदर्शन करने वाला शुक्रनीति का निम्न श्लोक लिखा हुआ है-

**''सर्वदा स्यान्नृपः प्राज्ञः, स्वमते न कदाचन। सभ्याधिकारिप्रकृति- सभारात्सुमते स्थितः।।''** (शुक्रनीतिः 2/3)

इसका आशय यह है कि हमारी कार्यपालिका, प्रधानमंत्री और उनके मंत्रिमण्डल के सदस्य विद्वान हों, किंतु अपनी बात पर हठपूर्वक अड़े न रहें। उन्हें सभासदों के विचार और परामर्श से निर्णय लेना उचित है।

संसद भवन के इन संदेशों के परिप्रेक्ष्य में हमारा हृदय उन अपने पूर्व पुरुषों की सूझ-बूझ पर श्रद्धा से भर उठता है। आज के संसद सदस्यों के अनेक बार अनुचित आचरणों से और मंत्रिमण्डलीय अनुचित निर्णयों को देखते हुए इन संदेशों का महत्व बहुत बढ़ जाता है।

-''ईशावास्यम्''

पी-३०, कालिन्दी हाउसिंग स्टेट, कोलकाता-89

मोबा. : 09432301602

# नरेन्द्र मोदी का भाषण

अतुल कुमार शुक्ला
लाइन पार, मुरादाबाद

हमें खुश इस बात से होना चाहिए कि देश का एक बड़ा तबका लाल किले से दिये गये नरेन्द्र मोदी के भाषण से स्वयं को काफी उत्साहित महसूस कर रहा है, और उसे लगता है कि देश के लिए एक रास्ते की दिशा नरेन्द्र मोदी ने दिखाई है। हमें भी लोगों की इस खुशी में शामिल होना चाहिए। जब इन्दिरा गांधी ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया था, तब लगा था कि अब बैंक इस देश के सामान्य लोगों के साथ खड़े हो जाएंगे और देश की अर्थव्यवस्था को आजाद कराएंगे। ये खुश होने वाले लोग राजीव गांधी के उस बयान से भी बहुत खुश हुए थे, जिसमें उन्होंने कहा था कि देश की जनता तक सिर्फ पन्द्रह पैसे पहुंच पाते हैं, बाकी भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाते हैं। तब लोगों को लगा था कि अब उल्टा हो जाएगा, 85 प्रतिशत जनता के पास पहुंचेगा, और 15 प्रतिशत भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ेगा। खुश होने वाले लोग विश्वनाथ प्रतापसिंह के भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन में शामिल होकर भी खुश हुए थे, और उन्हें लगा था कि यह देश अब भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान में किसी भी तरह की कोताही बर्दाश्त नहीं करेगा और न भ्रष्टाचार का आचरण पसंद करेगा। अटल बिहारी वाजपेयी के सत्ता में आते ही यह देश इस आशा में खुश हो गया था कि अब पाकिस्तान से रिश्ते भी बनेंगे और इस देश में टकराव की राजनीति भी खत्म हो जाएगी। इसके पहले हमारा देश जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन के फलस्वरूप बनी, जनता पार्टी की सरकार के समय भी बहुत खुश हो गया था। लोगों को लगा था कि यह देश सम्पूर्ण रूप से बदल जाएगा, पर देश नहीं बदला। लाल किले से नरेन्द्र मोदी के भाषण में यह आशा जगायी कि अब शायद देश कम से कम सामाजिक मुद्दों पर कुछ अधिक जागरूक हो जाएगा। नरेन्द्र मोदी के भाषण ने यह भी आशा जगायी कि जिन सवालों पर हम नहीं सोचते, जैसे सफाई, भ्रूण हत्या, शताब्दियों से चली आ रही मैला ढोने की अमानवीय प्रथा, शौच के लिए ज्यादातर ग्रामीण महिलाओं का खेतों में जाना आदि का समाधान संभव है। नरेन्द्र मोदी के भाषण ने भ्रष्टाचार के खिलाफ तकनीक के इस्तेमाल की संभावनाएं जतायीं। नरेन्द्र मोदी के भाषण ने भ्रष्टाचार के खिलाफ नेताओं को भी सामने आने के लिए कहा, और बलात्कार रोकने के लिए कठोर कदम उठाने का अनुरोध किया, और कहा कि इसे वे अपेक्षित ढंग से पूरा करें। नरेन्द्र मोदी के भाषण ने कम से कम यह तो बताया कि उनमें पिछले दस सालों से प्रधानमंत्री रहे मनमोहन सिंह से ज्यादा समझ है। उनमें लोगों की समस्याओं को देखने की क्षमता उनसे ज्यादा है, और वह इस देश को मनमोहन सिंह से ज्यादा समझते हैं। गांवों तक उद्योग पहुंचने चाहिए, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार खत्म होने चाहिए तथा देश में सौ प्रतिशत बिजली तथा उर्जा का उत्पादन होना चाहिए। तभी देश का विकास संभव है।

thearyasamaj.org



## विजय दशमी पर विशेष

# राष्ट्र में कैसे आ सकती है शांति

सुमन कुमार वैदिक

हमारे शरीर रूपी राष्ट्र में हृदय रूपी अयोध्या है। उस अयोध्या में राम विराजमान हो जाएं, तो शरीर में रामराज्य की स्थापना हो जाएगी। यही रामराज्य सभी के हृदयों में हो जाए, तो सभी के हृदयों में क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह के स्थान पर शान्ति का प्रदर्शन होने लगेगा।

किंतु यह अनायास ही नहीं होने लगेगा। इसके लिए राम के नाम जपने की नहीं, बड़े परिश्रम की आवश्यकता है। प्रभु की कृपा के साथ विचार, आहार, व्यवहार को शुद्ध बनाना है। सृष्टि से आज तक ऐसी शान्ति कभी नहीं आयी, प्रभु का शरीर यह संसार भी कभी शांत नहीं दिखा। यहां भी शान्ति और अशान्ति का सदैव प्रदर्शन होता रहा है। कहीं वायु अधिक, कहीं वर्षा अधिक, कहीं गर्मी अधिक है, तो कहीं अत्यंत शीत है। जब परामात्मा की महान सृष्टि शान्त नहीं, तो यह मानव शरीर तथा राष्ट्र कैसे शांत रहेगा? जब उसमें ही देवासुर संग्राम निरंतर हो रहा है, तो मानव के शरीर रूपी राष्ट्र में क्यों नहीं होगा? तब कैसे मानें कि संसार में शांति का प्रदर्शन हो सकता है?

यह ठीक है कि यह सम्भव नहीं, किंतु निराशावादी दृष्टिकोण न अपनाकर सकारात्मक सोच बनाएं। हमें संसार को त्रुटियों में, अशांत उपद्रवों में संलग्न नहीं, शांति में देखना है। यह तब तक नहीं होगा, जब तक स्वयं के हृदय को शांत नहीं बना लेते। किंतु मानव का स्वभाव होता है दूसरों की त्रुटियों पर चर्चा करना। वह कभी नहीं विचारता कि मैं कौन हूँ और मेरे अन्दर कितनी त्रुटियां हैं? यही संसार की अशांति का मूल कारण है, जिससे संसार के साथ हम भी अशांत हैं। हमें भी शांति नहीं मिल रही। मानव द्वारा मर्यादा का त्याग कभी नहीं करना चाहिए। इसी को त्यागने से संसार अशांति को प्राप्त हो जाता है, और मर्यादा में चलता है, तो शान्ति को ग्रहण करने वाला बन जाता है। जैसे अग्नि मर्यादा में रहकर संसार का कल्याण करती है, अमर्यादित हो विनाश करती है। जिस समय भगवान राम वन जाने लगे, तो उस समय मंत्री सुमन्त ने कहा कि हे राम! अयोध्या वापस चलो। मैं तो तुम्हें मार्ग दिखाने आया था। वन को न जाओ। उस समय भगवान राम ने कहा था कि मैं तो संसार में मर्यादा बांधने के लिए आया हूं। मुझे माता-पिता की आज्ञा का पालन करने में कोई कष्ट नहीं है। मर्यादा बांधने के लिए महापुरुष संसार में आते हैं, और उस मर्यादा को बांध देते हैं, जिस पर चलने से हमें शान्ति मिलती है। आज हमारे लिए मर्यादा है कि संसार में शुभ करने का प्रयत्न करना चाहिए। संसार में हानि न पहुंचाएं। हानि पहुंचाना मर्यादा से भिन्न है। संसार को सुख पहुंचाना, कार्यों को बुद्धिपूर्वक करना मर्यादा मानी गयी है। जो मर्यादा छोड़ देता है, उसका संसार में अवश्य विनाश हो जाता है। जो और मार्यादा में चलता है, उसकी अवश्यमेव विजय होती है। मर्यादा में चलकर समाज सुधर जाता है और उसमें शान्ति स्थापित रहती है। यदि संसार मर्यादित है, तो जीवन है, अन्यथा संसार में मानव का जीवन नहीं है। जिस राष्ट्र में मर्यादा नहीं, वह राष्ट्र संसार में न होने के तुल्य है। आज प्रत्येक राष्ट्र के नागरिक मातृभूमि की रक्षा को, समर्पण को सब मानते हैं। राष्ट्र की रक्षा अवश्य करनी चाहिए, परन्तु जब तक नागरिकों में मर्यादा नहीं आयेगी, तब तक किसी राष्ट्र में शांति नहीं होगी।

संसार में शान्ति भी कई प्रकार से की जाती है। शान्ति डण्डे से भी की जाती है, शान्ति मौन होकर बैठने को नहीं कहते। इसे कायरता कहते हैं। यदि कोई हमारी शान्ति में बाधक बने, वहां उसकी धूर्तता को शान्त करके हमारे हृदय में शान्ति उत्पन्न होगी। भगवान कृष्ण ने कहा कि हे अर्जुन! शान्ति का प्रतीक अपने कर्तव्यों का पालन करना है। यदि मर्यादा नहीं, और शान्त बैठे हो, तो शान्ति का कुछ नहीं बनेगा। शान्ति के साथ मर्यादा भी आवश्यक है। नाना अस्त्र-शास्त्रों के द्वारा हमारी मर्यादा पुष्ट होनी चाहिए, जिससे हम मर्यादा में बंध करके अशान्तिदायक व्यक्तियों को नष्ट करने वाले बनें। जैसा भगवान राम ने किया। विश्वामित्र के यज्ञ को नष्ट करने वाले दुष्टों को योजना बना, नष्ट कर यज्ञ की रक्षा की। (लेख ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचनों के आधार पर है।)

मोबा. : 09456274350

# ऐसे होते हैं आर्य

मुनि मोल्हड सिंह आर्य

आर्य सिद्धांतों की प्रखर जानकारी रखने वाले, स्वामी सत्यपति के शिष्य रामपुर मनिहारान (सहारनपुर) निवासी स्वामी दयानन्द को आदर्श मानने वाले मुनि मोल्हड सिंह आर्य, रामपुर मनिहारान की आर्यसमाज के मुख्य केन्द्र में रहकर अनेक सामाजिक गतिविधियां चलाते हैं। परिवार सहित नित्य स्वयं निर्मित ऋतु-अनुकूल सामग्री से यज्ञ करने वाले आर्य जी गृह पर गऊ पालन कर, उसके घृत से यज्ञ करते हैं। इनकी पत्नी इनके सभी कार्यों में सहर्ष सम्मिलित होती हैं।

आर्यसमाज में नित्य सायं 4 से 6 बजे तक सत्यार्थ प्रकाश की कक्षा एवं स्वाध्याय के लिए एकचित्त जनसमूह को मार्गदर्शन देना निकटवर्ती ग्रामों में रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी तक प्रतिवर्ष वेद प्रचार करना-कराना, आर्यसमाज में वार्षिकोत्सव कार्यक्रम कराने के साथ अपने लगभग 50 सहयोगियों के सहयोग से गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों तथा ब्रह्मचारिणियों को प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति प्रदान करना इनके मुख्य सामाजिक कार्यों में सम्मिलित है। कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद को वर्ष 2013-14 में एक लाख पचास हजार रुपये छात्र वृत्ति पर तथा एक लाख सत्तर हजार रुपये गेहूं के लिए समर्पित किये।

इस भागीरथ कार्य में इनके मित्र जबरसिंह आर्य (ग्रा0-जन्धेड़ी), ताराचन्द (इस्लाम नगर), डॉ0 अशोक कुमार गुप्ता (ग्रा0-फन्दपुरी), श्याम सिंह व वेदप्रकाश (रामपुर) जयपाल आर्य (ग्रा0-बम्बपाला) विशेष रूप से सहयोगी रहे हैं। ऐसे सुन्दर कार्य समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत करते रहें, ऐसी कामना परमात्मा से करते हैं।

# परिवारों में प्रेमरस बरसाएं

वीरेन्द्र कुमार आर्य

सभी परिवारीजन आपस में बहुत ही प्रेम से रहें। अपने परिवारों में सभी बड़ों-वृद्धजनों, पूज्य माता-पिता, दादी-दादा आदि का हृदय से सम्मान करें, उनको यथासंभव कोई कष्ट न होने दें। सभी पारिवारिक जन हर समय उनका अवश्य ही ध्यान रखें और आवश्यक सेवा करें। प्रात: उठकर चरणस्पर्श कर नमस्ते करें और आशीर्वाद प्राप्त करें। कभी भी कोई ऐसा कार्य न हो, जिससे उन्हें मानसिक कष्ट हो। सभी बड़े व छोटों को मानसिक प्यार दें। विशेष रूप से माता-पिता अपनी पुत्रवधू को बहू न मानकर बेटी मानें और उसके सुख-दुख का विशेष ध्यान रखें। बेटी की तरह ही रहने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान सम्मानजनक है। 'यस्य नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता:।' अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा (सत्कार) होती है, वहां देवता निवास करते हैं।

''जिस घर में होता नहीं नारी का सम्मान/ नरक तुल्य वह भवन है, है वह दुख की खान।।'

भारत के गौरवपूर्ण महापुरुष महर्षि दयानन्द ने नारी को गौरव, आदर, श्रद्धा, स्नेह और ममता की साकार प्रतिमा माना है। उन्होंने कहा है- जिस कुल में स्त्री से पुरुष और पुरुष से स्त्री सदा प्रसन्न रहती है, उसी कुल में आनन्द, लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है, और जहां विरोध, कलह होता है, वहां दुख, दरिद्रता और निन्दा निवास करती है। परिवार में सभी जन आपस में बहुत ही प्रेम से रहें। एक-दूसरे के सुख-दुख को अपना सुख-दुख समझें और किसी से भी निन्दा न करें। लोभी प्रवृत्ति दहेज आदि के कारण तथा पत्नी को दासी समझने की दूषित मनोवृत्ति के कारण जो पत्नी को प्रताड़ित तथा अपमानित करते हैं, उनकी निन्दा अवश्य ही करनी चाहिए तथा दोषी मानते हुए दण्ड भी मिलना चाहिए। ध्यान रहे कि पति-पत्नी का दर्जा बराबर का है। यदि किसी की कोई गलती हो, तो शांति के साथ आपस में बैठकर समाधान कर लेना ही उचित है। किसी को सुनाना भले लोगों का काम नहीं है। अहंकार, क्रोध और गलत जिद पर भी नहीं अड़ना चाहिए। यह सब प्रेम में बाधक हैं। सभी जन प्रेम से रहकर घर को स्वर्ग समान बनावें।

# क्या है नवदुर्गा व्रत का अर्थ

श्रद्धानन्द योगाचार्य

वर्ष में दो बार नवदुर्गा व्रत होता है, किंतु 'या देवी सर्वभूतेषु' से तात्पर्य है कि ईश्वर सब जगह व्यापक है। रामचरित मानस में कहा गया है कि ईश्वर सभी जगह समान रूप से व्यापक है। वेद में भी 'ओ3म् खम् ब्रह्म' अर्थात् ईश्वर आकाशवत् व्याप्त है।

इस शरीर का नाम दुर्ग है, और जो इसमें आत्मा रहता है, उसे दुर्गा कहते हैं। उसमें 9 प्रकार के विघ्न हैं। शारीरिक पीड़ा होना व्याधि, असत्य कर्मों से प्रीति स्त्यान, सत्य-असत्य का निश्चय न होना संशय, शुभ कार्यों को स्वयं न करना प्रमाद, शुभ कार्यों को टालते रहना आलस्य, विषय विकारों में ही तृष्णा होना अविरति, उल्टे ज्ञान का होना भ्रान्तिदर्शन, ईश्वर की प्राप्ति न होना उसे अलब्ध भूमिकत्व, प्राप्त होने पर स्थिरता न होना अनवस्थितत्व कहलाता है।

इन विघ्नों को योगाभ्यास द्वारा समाप्त करके परमानन्द को प्राप्त करना चाहिए। तभी नवदुर्गा व्रत की सफलता है।

अनावश्यक भूखे रहने से रक्तचाप की बीमारी होती है। अत: मौसम के अनुसार भोजन अवश्य करना चाहिए, तभी बीमारियों से छुटकारा मिलकर व्रत पूर्ण होगा।

-पूर्व उपमंत्री
आर्यसमाज-बजरिया,
कायमगंज (फर्रुखाबाद)

# सत्य पर स्वामी सत्यपति उवाच

1. सत्य बोलने से कभी हानि नहीं होती, और झूठ बोलने से कभी लाभ नहीं होता।

2. सत्य अपने आप नहीं जीतता है, अपितु उसे परम पुरुषार्थ, त्याग, तपस्या तथा युक्ति से जीतना पड़ता है।

3. बहुत परिश्रम और परीक्षण करने के पश्चात् व्यक्ति सदा सत्य बोलता है, अन्यथा अज्ञानपूर्वक बहुत सा असत्य बोलता रहता है।

4. मान-अपमान, हानि-लाभ आदि लौकिक दृष्टि से विचारने वाला व्यक्ति कभी भी विशुद्ध सत्य का प्रयोग नहीं कर सकता, वह प्राय: इनसे प्रभावित होकर असत्य बोल ही देता है।

5. सत्यवादी व्यक्ति मृत्यु को अपना लेता है, परन्तु ईश्वर की उपासना और उसकी आज्ञा का पालन करना कदापि नहीं छोड़ता है।

6. अपने मन में एक मूल भावना हमेशा बनाए रक्खें। मुझे केवल सत्य की चाह है, मैं सत्य को ही ग्रहण करूंगा, ऐसा व्यक्ति सत्य से कभी नहीं डगमगाएगा।

7. जिसे किसी भी प्रकार का भय रहेगा, वह पूर्ण सत्यवादी हो ही नहीं सकता।

रामपुर मनिहारन (सहारनपुर)

theraryasamaj.org



# मण्डलीय आर्य महासम्मेलन २ से

## गतवर्षों की भांति टंकारा जायेगा आर्यों का जत्था

### आर्य उपप्रतिनिधि सभा की बैठक में लिए अनेक निर्णय

**अमरोहा।** आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा के तत्वावधान में 02 से 06 नवम्बर तक गंगा मेला, तिगरी घाट पर सैक्टर-6 में भव्य मण्डलीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जाएगा, तथा 16 से 18 फरवरी 2015 तक गुजरात प्रान्त के टंकारा में ऋषि जन्मभूमि पर आयोजित होने वाले बोधोत्सव में आर्यों का जत्था अमरोहा से रवाना होगा। ये निर्णय यहां आर्यसमाज, हसनपुर में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा की बैठक में सर्वसम्मति से लिये गये।

बैठक में जनपद भर से पधारे आर्य प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान डॉ. अशोक कुमार आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने सुप्त जनमानस में अभूतपूर्व जागृति उत्पन्न की, तथा संसार के कल्याणार्थ आर्यसमाज की स्थापना की।

उपसभा की बैठक में बगद नदी के जलप्रदूषण पर गहरी चिन्ता व्यक्त की गयी। साथ ही फिल्म उद्योग में बढ़ती अश्लीलता पर रोष व्यक्त करते हुए सरकार से मांग की गयी कि इस नग्नता व अपसंस्कृति के प्रसार को अविलम्ब रोका जाए। प्रस्ताव पर नन्हें सिंह आर्य, विनय कुमार गुप्ता, सरभित गुप्ता ने चर्चा की।

उपसभा के कार्यकर्ता प्रधान देवेन्द्र कुमार आर्य ने प्रस्तुत प्रस्ताव में कहा कि ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज का राष्ट्रीय आन्दोलन व जनान्दोलनों में विशेष योगदान है, जो कदापि भुलाया नहीं जा सकता। सरकार इस ओर ध्यान दे। बैठक में नरेन्द्र कान्त गर्ग, हरिओम अग्रवाल ने गोवंश संरक्षण व विकास पर विशेष बल दिया।

उपदेश व वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता हरिश्चन्द्र आर्य ने आगामी वेद प्रचार की रूपरेखा प्रस्तुत की। बैठक में रोहिताश सिंह, सत्येन्द्र कुमार आर्य ने ग्राम-ग्राम, नगर-नगर में आर्यसमाज के प्रचार कार्यक्रमों के विस्तार पर बल दिया।

बैठक में यह भी बताया गया कि आगामी 13, 14, 15 व 16 अक्टूबर को आर्यसमाज दढ़ियाल, 22, 23 व 24 नवम्बर को आर्यसमाज हसनपुर का वार्षिकोत्सव होगा, तथा इसी क्रम में 30 दिसम्बर को रहरा में पं0 प्रकाशवीर शास्त्री, प्रखर सांसद की जयंती उपसभा द्वारा धूमधाम से मनायी जाएगी।

उपसभा की अन्तरंग सभा की बैठक में आर्यावर्त केसरी की प्रगति आख्या भी प्रस्तुत की गयी, तथा महर्षि दयानन्द की अमर कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' के भव्य एवं क्रान्तिकारी प्रकाशन पर भी चर्चा की गयी। बैठक में सर्वसम्मति से उपसभा का आय-व्यय लेखा पारित हुआ तथा आगामी बजट भी स्वीकार किया गया।

अध्यक्षता डॉ0 अशोक कुमार आर्य, प्रधान ने की। संचालन कार्यकर्ता प्रधान देवेन्द्र कुमार आर्य ने किया। बैठक में श्रीराम सेवा ट्रस्ट (पंजी0) के संस्थापक व उपसभा के संरक्षक श्रीराम गुप्ता भी विशेष रूप से उपस्थित थे। अन्त में स्व0 गजराज सिंह आर्य व स्व0 वेगराज सिंह भजनोपदेशक के आकस्मिक निधन पर सभा की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

## गुरुकुल का उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

**मनु आर्या**
भैयां चामड़ (अलीगढ़)

गार्गी कन्या गुरुकुल, भैयां चामड़ का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य रामप्रकाश वर्णी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। उत्सव में यज्ञ के महत्व, वैदिक जीवन शैली, सुखी गृहस्थ, धार्मिकता, राष्ट्रीय कर्तव्य आदि विषयों पर विद्वानों के सारगर्भित प्रवचन हुए। मनु आर्या के मार्गदर्शन में गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। शारीरिक शौर्य प्रदर्शन भी किया गया। 15 नूतन ब्रह्मचारिणियों का यज्ञोपवीत एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर स्वामी केवलानन्द सरस्वती जी, स्वामी वेदप्रकाश सरस्वती, भजनोपदेशक पं. जुगलकिशोर, आचार्य ओमव्रत, आचार्या पवित्रा, शारदा आर्या उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अन्त में गुरुकुल के संचालक स्वामी चेतनदेव वैश्वानर ने सभी को पर्व की शुभकामनाएं दीं। साथ ही दूर-दूर से पधारे श्रोताओं का अभार व्यक्त किया।

## कृष्ण योगेश्वर थे भोगेश्वर नहीं

**सहारनपुर।** आर्यसमाज खलासी लाइन में वेद प्रचार महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक विज्ञान आचार्य धीरज कुमार के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। आचार्य जी ने यज्ञ के बाद श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि सफलता के लिए भौतिकता व आध्यात्मिकता में समन्वय जरूरी है। एक की पराकाष्ठा व दूसरे की उपेक्षा का परिणाम अवसाद ग्रस्तता ही निकलेगा।

आचार्य जी ने विवाह पूर्ण गुणकर्म स्वभाव के मिलान की प्रेरणा दी और कुण्डली आदि के मिलान की प्रथा को अनुचित बताया। तत्पश्चात् वैदिक विद्वान अनुज शास्त्री ने अपने प्रवचन में कहा कि श्रीकृष्ण योगेश्वर थे, उन्हें भोगेश्वर स्थापित करना गलत है, वे योगी थे, भोगी नहीं।

वैदिक भजनोपदेशक विनोद दधीचि ने भजनों के माध्यम से वेदाचरण अर्थात् वेदों के आचरण करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि 'तुझको मानव बनाया था, क्या बन गया है।'

## आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा ( उ.प्र. )
दूर.-05922-262033, चल.- 09758833783, 08273236003

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई,
डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी,
इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जेपी नगर
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्सः 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com